संगम

हिन्दी पत्रिका

सितंबर 2023

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

Indian Institute of Management Tiruchirappalli

पत्रिका समिति के सदस्यगण:

प्रो. जंग बहादुर सिंह

प्रो. अभिषेक तोतावार

प्रो. प्रवीण पी. तांबे

प्रो. वासवी भट्ट

डॉ. के. इलवऴगन

सुश्री सजीला एम

प्रतिलिप्यधिकार

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेरोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

कवर छवि एआई (डॉली) का उपयोग करके बनाई गई है, जिसमें निम्नलिखित निर्देश दिये थे।

“वैन गॉग शैली की एक पेंटिंग जो विविध विचारों और अभिव्यक्तियों के संगम का प्रतीक है।”

मूल रूप से भारत में प्रकाशित

पुस्तक : संगम

© भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

संस्करण : तृतीय

वर्ष : 2023

प्रकाशक: भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रक:

सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि. बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-1, 13वां तल, यूनिट 29,
ब्लॉक ईएम-3, सेक्टर-V, साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल – 700091

विषय-सूची

सम्पादकीय	2
निदेशक का संदेश	3
युवा वर्ग के नाम एक पत्र	4
कविता	
शिक्षक दिवस पर सप्रेम भेंट	6
प्रकृति	7
आ अब घर चलें	8
सफर	9
मंजिल	10
ज्ञान - पान	11
हारता बुजुर्ग	12
माँ क्या होती है	13
कविताएँ	14
लिखना चाहता हूँ	15
माँ का प्यार	16
समय	17
सीधी-सादी राह पकड़	18
बाढ़	19
प्रयास	20
आधुनिकता की दौड़ में	21
ऐ पगले!	22
एक कहानी : भोपाल	23
खोल दो वातायनों को	24
प्राकृतिक संगीत	25
बाल ही तो है...	26
माँ सिर्फ तुम हो	27
जीत	28
भीड़	29
चिड़िया रानी, मत आना मेरे आँगन	30
अनंत प्रेम की प्रतिमा	31
लेख	
जल उपलब्धता की समस्या एवं आपूर्ति के उपाय	32
एक एमबीए छात्र के रूप में अर्जुन और उनका ध्यान: महत्वपूर्ण उदाहरण	33
'नमस्'-एक आत्मिक बोध	34
जागिये तभी होगा सवेरा	36
सच्चा होना हमेशा आनंदमय होता है	38
भाग्यवादी और पुरुषार्थी में श्रेष्ठ कौन?	40
कला	41
वॉशिंग मशीन - आंतरिक शांति के लिए गुरु	42
अपने दिन को सुंदरता से सजाएं: सकारात्मक जीवन के रहस्य	43
कुरुक्षेत्र से कॉर्पोरेट दुनिया तक: महाभारत के अद्भुत प्रबंधन ग्रंथ	44
भारतीय संस्कृति और परंपरा	46
भारत का भविष्य - आगामी नेता	48
आज़ाद भारत की 75 साल की यात्रा	50
बाल्य कक्ष	
महकते फूल	51
नानी का घर	52
अमीर और गरीब	53
रामू और उसका दोस्त रोहन	54
पुस्तक समीक्षा	
"ईकिगाई: जापानी सागर का खजाना"	55
राग दरबारी : एक समीक्षा	56

सम्पादकीय

प्रिय पाठक गण,

हम अत्यंत हर्ष तथा आशा के साथ आपके समक्ष अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका "संगम" का तीसरा संस्करण प्रस्तुत कर रहे हैं। विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हमने विविध विचारों और अभिव्यक्तियों के असीमित दायरों का अन्वेषण करने के लिए एक यात्रा शुरू की और यह अंक उसी यात्रा में राहगीर के रूप में साक्षी बन रहा है।

सबसे पहले, हम अपने प्रत्येक योगदानकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने "संगम" को विचारों, दृष्टिकोणों और भावनाओं का एक सच्चा संगम बनाने के लिए अपनी रचनात्मक ऊर्जा प्रदान की है। विशेष रूप से, हम अपने सम्मानित निदेशक डॉ. पवन कुमार सिंह के अटूट समर्थन के लिए अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं। "संगम" के दृष्टिकोण में उनका विश्वास और मार्गदर्शन ही पत्रिका को आज इस रूप में आकार देने में सहायक रहा है।

संक्षेप में, "संगम", विभिन्न व्यक्तियों के विचारों और उनके भावनाओं के संगम का प्रतीक है। हम इसका 'गेस्टाल्ट' लेंस या समष्टि के माध्यम से अवलोकन करते हैं और मानते हैं कि विभिन्न दृष्टिकोणों का विलय उनके भागों के योग से कहीं अधिक कुछ विशिष्ट उत्पन्न करता है। इस वर्ष, हमारा कवर पेज विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह मानव रचनात्मकता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के बीच सहयोग से जनित हुआ है। जेनरेटिव एआई, डीएएलएल-ई का उपयोग करते हुए, हमने इसे विविध विचारों और अभिव्यक्तियों के विलय का प्रतीक वान गाग शैली की पेंटिंग में एक छवि बनाने के लिए प्रेरित किया। विदित हो कि वान गॉग 18वीं शताब्दी के एक डच चित्रकार थे और पश्चिमी कला के इतिहास में सबसे प्रभावशाली शख्सियतों में से एक थे।

जेनरेटिव एआई द्वारा निर्मित विभिन्न छवियों में से, हमने सावधानीपूर्वक एक छवि का चयन किया जो हमारी पत्रिका के दृष्टिकोण के अनुरूप थी। यह हर्ष और संयोग का विषय है कि एआई ने कवर पेज को "पंचतत्व" के संगम के रूप में चित्रित किया है। मानव और एआई प्रयासों का यह समामेलन रचनात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में आगे मौजूद अपार संभावनाओं के चित्रण के रूप में कार्य करता है।

हमारे कवर पेज का उदाहरण समाज के प्रौद्योगिकी के साथ विकसित होते संवाद का परिप्रेक्ष्य दर्शाता है, विशेष रूप से डिजिटल युग और एआई के उदय को प्रतिबिंबित करता है। पूर्व में, कंप्यूटर के उपयोग ने स्वचालन और रोज़गार विस्थापन से सम्बंधित चिंताओं को जन्म दिया था। परन्तु, इतिहास साक्षी है कि ये चिंताएँ काफी हद तक निराधार थीं। मनुष्य को विस्थापित करने के बजाय, प्रौद्योगिकी प्रायः मानवीय क्षमताओं को पूरक बनाती है, और नए अवसर उन्मुक्त करती है। इसी तरह, यद्यपि एआई निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को बदल रहा है, मानवीय हस्तक्षेप फिर भी अत्यावश्यक बना हुआ है। हम भविष्य के ऐसे पड़ाव पर खड़े हैं जहां एआई प्रतिस्पर्धी नहीं, अपितु सहयोगी बन सकता है। हमें अपने दृष्टिकोण को कार्य करने और कौशल के बदलते परिदृश्य के अनुकूल परिवर्तित करना होगा। मानव कौशल के विस्थापन से डरने के बजाय, हमें मनुष्यों और मशीनों के बीच सहयोग की क्षमता को अपनाना चाहिए। जिस प्रकार अतीत में नई तकनीकों ने नए कौशल का विकास किया, उसी अनुरूप एआई क्रांति के लिए निर्णय, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अनुकूलनशीलता जैसे गुणों को रोपित करने की आवश्यकता है। जिस प्रकार एआई बड़ी मात्रा में डेटा संसाधित करने में उत्कृष्ट है, वही सहानुभूति, अंतर्ज्ञान और सूक्ष्म समझ के लिए हमारी विशिष्ट मानवीय क्षमता सार्थक निर्णयों को आकार देने में निरंतर उपयोगी सिद्ध होगी। इसके साथ ही एआई के उपयोग से उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दों को समझना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस सन्दर्भ में ध्यान रखने वाली बात यह है की एआई की उपयोगिता का उत्तरदायित्व उपयोगकर्ता पर होता है।

अंत में, हम पुनः अपना आभार व्यक्त करते हैं - हमारे सभी योगदानकर्ताओं का और आप में से प्रत्येक जन का जिसे संगम की शक्ति में पूर्ण विश्वास है। प्रिय पाठक गण, जैसे ही आप "संगम" के इस तीसरे संस्करण के पन्नों को पलटते हैं, याद रखें कि यह हमारी यात्रा का प्रारंभिक चरण मात्र है। आपके सामने पत्रिका का कवर पेज एक ऐसी दुनिया को देखने के लिए निमंत्रण के रूप में कार्य करता है जहां मानव रचनात्मकता और एआई क्षमता एक मनोरम आख्यान के लिए आपस में जुड़ती हैं। सहभागिता हमारे युग की मनोभावना होनी चाहिए, इसी गुणसूत्र के साथ हमारी पत्रिका आपकी समीक्षा हेतु समर्पित है।

डॉ. पवन कुमार सिंह
निदेशक

निदेशक का संदेश

हमारे संस्थान की वार्षिक हिन्दी पत्रिका की तृतीय प्रति आपके हाथों में है। पढ़ें, आनन्द लें, एवं हमें बताएँ कि इसकी गुणवत्ता के वर्द्धन में क्या सुधार करें !

हिन्दी भारतवर्ष की राजकीय भाषा है तथा देश के बड़े भू-भाग की मातृभाषा। हिन्दी भाषा रसपूर्ण है, जैसे कि देश की सभी भाषाएँ। अपनी क्षमता तथा रुचि के आधार पर आप तीन प्रकार की हिन्दी को उपयोग में ला सकते हैं। प्रथम है, संस्कृत - निष्ठ हिन्दी। द्वितीय है, उर्दू - मिश्रित हिन्दी। तृतीय है, कार्योपयोगी कार्यालयीन हिन्दी। तीनों की अपनी-अपनी महत्ता तथा उपयोगिता है।

संस्कृत-निष्ठ हिन्दी, संस्कृत शब्दावली पर आधारित है। इसके लिये संस्कृत में शब्दों के विशाल भण्डार का आधाररूप में प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की हिन्दी में संस्कृत भाषा का लालित्य समाविष्ट हो जाता है। यदि आपको हिन्दी के मूलभूत आधार की समझ है, तो संस्कृत-निष्ठ हिन्दी के प्रयोग को आप सरलता से अपना सकते हैं। कुछ उदाहरणों का अवलोकन करें। बहुधा हम इन शब्दों का प्रयोग करते हैं - दुनियाँ, अख़बार, काबिल, मंजर, जिन्दगी, खराबी, उम्दा इत्यादि। आप इन शब्दों को भी कदाचित जानतें होंगे - संसार, समाचारपत्र, योग्य, परिवेश, जीवन, त्रुटि, उत्कृष्ट। ये शब्द पहले लिखे शब्दों के क्रमश: संस्कृत-निष्ठ शब्द हैं, तथा हैं अत्यन्त सरल। जिनकी हिन्दी कुल मिलाकर अच्छे स्तर की है, वे आवश्यकता व परिप्रेक्ष्य के आधार पर यदि संस्कृत - निष्ठ हिन्दी का उपयोग करें तो उनकी भाषा के लालित्य में संवर्धन होगा तथा भाषा की लोच का भी आनन्द उठा सकेंगे।

वर्तमान समय में शुद्ध हिन्दी के नाम पर हम बहुधा उर्दू- मिश्रित हिन्दी का उपयोग करते हैं। कदाचित हिन्दी तथा उर्दू शब्दावली हैं ही घुले-मिले। उर्दू-शब्द मिश्रित हिन्दी को दोषपूर्ण नहीं कहा जा सकता। अच्छी हिन्दी जानने वालों को उर्दू के शब्दों का भी एक छोटा सा भण्डार अपने पास रखना चाहिए। वर्तमान में जिसे हम शुद्ध हिन्दी कहते हैं, उसमें बड़ी मुक्तता से उर्दू के शब्द प्रयोग में लाए जा रहे हैं। उर्दू भाषा तथा इसके शब्दों में भी संस्कृत जैसा ही एक सुन्दर प्रवाह पाया जाता है। यदि आपके पाठक या श्रोतावर्ग में उर्दू के कद्रदाँ हों तो उर्दू-शब्द मिश्रित हिन्दी का प्रयोग तारतम्यता स्थापित करने में सहयोग प्रदान करता है। संस्कृत के विद्वान यदि संस्कृत-निष्ठ हिन्दी कहने में कठिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, या उर्दू के जानकार यदि हिन्दी के प्रयोग में कठिन अरबी-फारसी शब्दों को समाहित करते हैं तो आम पाठक तथा श्रोता को कुछ कठिनाई होने लगती है। भाषा की सरलता ही इसकी व्यापक उपयोगिता का मूलमन्त्र है, तथापि किसी भाषा की अक्षुण्णता का भी हमें ध्यान रखना चाहिए।

हिन्दी का एक अन्य प्रारुप है - कार्यालयीन हिन्दी। क्लिष्ट एवम् परिमार्जित हिन्दी का उपयोग करने वाले को भी इस स्तर पर उतर कर कार्य करने की क्षमता होनी चाहिए। इसमें साधारण हिन्दी का उपयोग होता है। इस प्रकार की हिन्दी साहित्यिक तो नहीं, परन्तु हिन्दी के प्रयोग की आरम्भिक यात्रा में ऐसी हिन्दी का उपयोग नि:संकोच होकर धड़ल्ले से करें। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी का एक वाक्य लें - The decision was taken after discussion in the meeting. इस वाक्य का हिन्दी अनुवाद होगा - बैठक में विचार-विमर्श करके इस निर्णय को लिया गया। परन्तु कार्यालय में पदस्थ कई सहकर्मी इस प्रकार की हिन्दी को उपयोग में लाने में कठिनाई हो सकती है। वे हिन्दी में इस प्रकार भी लिख सकते हैं - मीटिंग में डिस्कशन के बाद यह डिसिशन हुआ। हिन्दी के विद्वान क्षमा करें, परन्तु कार्यालयीन प्रयोग के लिए प्रारम्भिक स्तर के हिन्दी के जानकार के लिए इस प्रकार की हिन्दी मान्य है तथा होनी भी चाहिए। ऐसी हिन्दी के प्रयोग करने वाले बाद में अपनी भाषा को थोड़ा निखारने का प्रयास भी अवश्य करें। हिन्दी बाहें पसारे सबके स्वागत को उत्सुक है, उससे मिलें, उसका प्रयोग करें, तथा अपनी क्षमताओं को नवीन आयाम दें।

सम्भव हो तो प्रत्येक भारतीय को व्यक्तित्त्व व संभावनाओं को पुष्ट करने के लिए सात भाषाओं को जानने का प्रयास करना चाहिए - मातृभाषा, हिन्दी, संस्कृत, मातृभाषा के अलावा कोई अन्य भारतीय भाषा, अंग्रेजी, कोई एक अन्य विदेशी भाषा, तथा, प्रेम की भाषा!

युवा वर्ग के नाम एक पत्र

डॉ. पवन कुमार सिंह, निदेशक, भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

शिक्षक हूँ इसलिए युवाओं से ही घिरा रहता हूँ। इस कारण सर्वदा स्वयं भी युवा होने का बोध होता रहता है। इसके लिए युवा विद्यार्थियों को धन्यवाद !

जीवन की कई अवस्थाएँ हैं - शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, पौगण्डावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था, तथा जीर्णावस्था। मनुष्य को परोपकारार्थ कर्म करते हुए लम्बे काल तक जीने की कामना करनी चाहिए, ऐसा ईशावास्योपनिषद कहता है। यहाँ कामना का अर्थ आसक्ति नहीं है। मानव जन्म अनमोल है अत: आयु के हर पड़ाव का अनुभव हमें हो ! प्रत्येक पड़ाव का अपना आनन्द है और हर स्थिति हमें गहरे अनुभवों से परिचित कराती है। बचपन तो सुहाना था, ऐसा सभी कहते हैं, परन्तु अपने अन्दर के निर्दोष बाल्यसुलभ स्वभाव को यदि पुष्ट रखा जाए तो पूरा जीवन सुहाना है। हाँ, मंजर बदलते जाएँगे और परिवर्तनों का स्वागत आपको करना पड़ेगा। प्रकृति के नियमों को आपको समझना होगा और उसे स्वीकार करना होगा, इससे पूरा जीवन रसमय हो सकता है।

युवावस्था में हम युवक या युवती कहलाते हैं। यह काल बेहद महत्त्वपूर्ण हैं, अत्यन्त उल्लास से भरा हुआ एवं जिम्मेदारियों से भरा हुआ। पहली जिम्मेदारी आपकी अपने प्रति है और फिर अन्य कई बातों के प्रति। अपने को खूब पुष्ट कीजिए, अध्ययन के स्तर पर तथा शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्तरों पर। चूँकि आपका मार्ग लम्बा है और यदि आप गंभीर जिम्मेदारियों के निर्वहन की तैयारी कर रहे हैं तो स्वयं हल्के-फुल्के रहिए, मुस्कुराते रहिए, खिलखिलाते रहिए, सबों के आनन्द के लिए सुगन्ध बिखेरते रहिए; अपना ध्यान किसी वांछनीय लक्ष्य की ओर लगाए हुए। चुनाव आपका है, परन्तु मुँह लटकाए हुए, गंभीरता की अनावश्यक मोटी चादर लपेटे हुए यात्री शायद यात्रा को बोझिल ही कर देते हैं।

आपका व्यक्तियों से सम्बन्धित होने का प्रकार क्या है, इस बात पर बहुत हद तक निर्भर करता है आपके जीवन का आनन्द। प्रेम, सहयोग, सम्मान, और अनासक्ति, इन चार बातों पर आधारित हैं आपके सम्बन्ध, चाहे वह बड़ों के प्रति हो, या छोटों के प्रति, या समकक्ष के प्रति। इन चारों बातों को एकतरफा ही रखिए, बिना यह अपेक्षा रखे कि दूसरे तरफ का व्यक्ति भी इन चारों को आपको प्रदान करेगा। अपेक्षा रहितता आपको निर्भर बना देगा और दुश्वारियाँ आसानियाँ में बदल जाएँगी। आपको आपकी अनुमति के बिना कोई उदास नहीं कर सकता। दु:ख का कारण दूसरा व्यक्ति नहीं है, अपनी नासमझी ही दु:ख का कारण है। आप तो सबों के सुख का कारण बनिए, आनन्द की धारा आपको स्वयमेव प्राप्त हो जाएगी।

जो कुछ भी मूल्यवान है, वह तप के बिना नहीं मिलता। छोटे-मोटे प्रयास से छोटी-मोटी मंजिल मिलती है, तपपूर्ण उद्यम से मूल्यवान लक्ष्य प्राप्त होता है। अपने तात्कालिक लक्ष्य और दूरगामी लक्ष्य में द्वन्द्व पैदा न करें। दोनों के लिए समानान्तर रूप से कार्य करें। अपने प्रयास से तात्कालिक लक्ष्यों को प्राप्त करते रहें एवं सतत उद्यम से धीरे-धीरे या उचित गति से दूरगामी लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। दूरगामी लक्ष्य बहुत कीमती है, अत: यह आपकी परीक्षा लेगा, इसलिए इस बात में उतावलापन न करें। बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है, यह बात अक्सर युवावस्था में नहीं सुहाता, परन्तु यही सत्य है मूल्यवान लक्ष्य की ओर बढ़ने के सन्दर्भ में।

जीवन इन्द्रधनुषी रंगों को समेटे है। सभी रंगों से निपटने की तैयारी रखिए। कभी अनायास आनन्द की फुहारें पड़ेंगी। कभी ऐसा भी मंजर आएगा कि आप सभी ओर से संकट से घिरा अनुभव करेंगे। ऐसी परिस्थिति से भागें नहीं, इसे स्वीकार करें और यह विचार करें कि इससे उबरने के लिए कोई एक रास्ता अवश्य है, अवश्य है, अवश्य है! आपको रास्ता दिखने लगेगा। अपने भीतर के आनन्दभाव को सर्वदा बनाए रखें - नो कॉम्प्रोमाइज़ विद इट! ईश्वर कठिन प्रश्नपत्र उसी के लिए बनाता है जो इसकी पात्रता रखता है।

केवल आप ही अपनी ओर नहीं देख रहे हैं। आपके परिवार में सभी बड़े-छोटे, समाज, मित्रवर्ग, शुभचिंतकों का समूह, देश, व विश्व - चेतना आपकी ओर देख रही है। आपकी हरकतें उन्हें आनन्द प्रदान करें ! सप्रेम !!

शिक्षक दिवस पर सप्रेम भेंट

सुशीला भट्ट, परिवार सदस्य, प्रो. वासवी भट्ट

मैं एक शिक्षिका हूँ। ऐसे ही मेरी समझ में आता है,
जाने अनजाने प्रश्नों की मैं सटीक जवाब बन जाती हूँ।
इसलिए मैं अपने अनोखे तरीकों की लाजवाब बन जाती हूँ।
चॉक, डस्टर से खेलते-खेलते मैं बदरंग सी बन जाती हूँ।
लाल स्याही के रंग में रंगकर, गुलाल सी बन जाती हूँ।
थकती नहीं मैं कभी भी घड़ी से भी कहीं आगे निकल जाती हूँ।
सूरज पांच बजे उठता है। मैं पर तीन बजे ही उठ जाती हूँ।
क्योंकि मैं एक शिक्षिका हूँ।

विद्यालय में मेरे रोज सबसे पहले हस्ताक्षर
यदि कभी लेट पहुँचने पर अपना सिर झुकाती हूँ।
कभी अपनी गर्वीली आवाज से विद्यालय में सबको शान्त करवाती हूँ।
और कभी अपने प्रिय छात्र / छात्राओं के बीच में बैठकर खूब ठहाके लगाती हूँ।
क्योंकि मैं एक शिक्षिका हूँ।

कभी घंटों खड़े-खड़े हो पूरा पाठ पढ़ाती हूँ।
एक ही पुस्तक को सालों से पढ़ाकर मैं पुस्तक को ही रट जाती हूँ।
यदि कभी छात्रों के पूछे प्रश्नों के उत्तर न मिले तो मैं बेचैन भी हो जाती हूँ।
और नई-नई खोज करके उत्तर भी दे जाती हूँ।
सिर्फ पढ़ाना ही मेरा हुनर नहीं मैं बच्चों को सब कुछ सिखा जाती हूँ।
विद्यालय के हर कार्यक्रम को कराकर मैं स्वयं कलाकार बन जाती हूँ।
फिर कभी भी अवकाश मिले तो मैं अपने घर में उत्सव भी मनाती हूँ।
क्योंकि मैं एक शिक्षिका हूँ।

बीमार होने का कभी भी हक नहीं मुझे, मैं बिना दवा खाए ठीक हो जाती हूँ।
इसके साथ ही अपनी घर गृहस्थ जीवन को भी भली भांति निभाती हूँ।
जीवन में अपने खर्चों को पूरा करने के लिए मान-सम्मान कमाती हूँ।
माना पैसे भी मेरी जरूरत है, इसलिए कमाने जाती हूँ।
लेकिन मुझे गर्व इस बात से है, मैं देश का भविष्य बनाने जाती हूँ।
कच्ची मिट्टी पर मैं बड़े प्यार से नया आकार बनाने जाती हूँ।
बच्चों को कुछ नया सिखाते-सिखाते खुद मैं भी कुछ नया सीख जाती हूँ।
क्योंकि मैं एक शिक्षिका हूँ।

प्रकृति

दिव्या द्विवेदी, पत्नी, प्रो. बिपिन दीक्षित

सुना है कि!!!
जब दर्द आँखों से छलकता है, तो कविता बनती है
इन शब्दों की हर कड़ी, हम-आप से कुछ कहती हैं
जब रात की ख़ामोशी दिन के कोलाहल से, ज़्यादा सुख देती है
जब पत्तों की सरसराहट इन कानों में, चुपचाप से कुछ कहती हैं
जब झींगुरों की आवाज़ किसी मधुर संगीत सी, मोहक लगती है
जब जुगनुओं की चमक तमाम रौशनी को मद्धम करती है
जब मिट्टी की भीनी-भीनी ख़ुशबू, किसी इत्र सी सुगन्धित लगती हैं
जब बादलों की गड़गड़ाहट मन में एक, उमंग सी भर देती है
जब ओस की नन्ही-2 बूँदें इस तन-मन को, भिगो देतीं हैं
जब रंग-बिरंगी कलियाँ जीवन के तम को, धो देतीं हैं
जब कोयल अपने साथ कुहुकने को, मजबूर कर देती है
और जब प्रकृति वात्सल्य से हमें, अपनी गोद में भर लेती है
तब ज़िन्दगी बस इन्हीं कुछ लम्हों में, सिमट जाती है
वास्तविकता ये है कि, तब भी एक कविता बनती है
और वो कविता लिखी, पढ़ी, कही या सुनी नहीं जाती
बल्कि हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में जी जाती है

आ अब घर चलें

आयुष गौड़, पीजीपीएम 2023-25

बहुत वक्त हो गया है इस शहर के शोर में
अब तो खुद की आवाज भी गुम है
आए थे दिल की सुनने पर अब तो धड़कन भी चुप है
ख्वाब सच हुए पर फिर भी खालीपन है
आ अब घर चलें क्योंकि वहीं बस अपनापन है
पैसों की भूख थी नाम कमाने का लालच
आ गए इस शहर में करने अपने सपने सच
यहां की चकाचौंध में ऐसे खो गए
ना जाने कब खुद से ही अनजान हो गए
लग गए भेड़ चाल में जीत की भागम भाग में इतनी रफ्तार से कि इस बात से अनजान थे
वक्त की तरह अपने भी फिसलते जा रहे थे
करी मेहनत मिली सफलता पर फिर भी नींद कहां आती है
जिंदगी अपनी शर्तों पे जीने के बाद भी बेचैनी सिखाती है
आ अब घर चलें जहां माँ सर गोद में रखकर सुलाती है
आ अब घर चलें जहां सुकून भरी नींद आती है
चलना माँ बुलाती है
आए थे घर की दहलीज लांघ के अपनी ख्वाहिशों को जरूरतें मान के
पराए शहर को अपना बनाने
सबको पीछे छोड़ खुद की दास्तां बुनने
अपनी जिंदगी की नई परिभाषा लिखने
अब पहचान तो बना ली पर खुद का वजूद खो बैठे
दूरी को दोषी मान अपनों की कीमत भुला बैठे
जल्द मिलने का वादा तो करके आए थे लेकिन काम में उलझते गए
होली दिवाली यूं ही बीत गए
जिंदगी चलती रही और वो वादे
महज़ शब्द ही बन के रह गए
शब्द ही बनके रह गए
आ अब घर चलें जहां बची सिर्फ चारदिवारी
आ अब घर चले जहां सिर्फ सन्नाटों को तेरा इंतजार है
कहने को तो सब हैं मेरे, पर घर की बहुत याद आती है
देखना माँ मैं घर आ गया अब तो आजा तेरी बहुत याद सताती है
बहुत याद सताती है ॥

सफर

जीत वर्तक, पीजीपीएम 2023-25

उड़ान भरनी थी मुझे मेरे घर से दूर।
इसलिए चला आया इन किताबों के शहर।

ना जाने कितनी कठिनाईयाँ सही पहुँचते पहुँचते।
पर वो आनंद न मिला यहां पहुँचकर।

जिंदगी में सफल होना है सभी को।
पर किसी को साथ चलना नहीं दूसरों के।

यही तो है फर्क जवाब वो हस्तियों में और आप में
रोते-रोते थककर जैसे कोई बच्चा सो जाता है।

यहां आकर हम भी कुछ ऐसे ही सो जाते हैं।
परिवार क्या है वो तुम यहां आकर समझोगे।

अपने कैसे पराए लगेंगे वो भी समझोगे।
यह काल ऐसा है कि कभी कभी चाय मीठी नहीं लगती।

दोस्त सच्चे नहीं लगते और यारियां अपनी नहीं लगती।

मंजिल

इंजमामुल हुदा, पीजीपीएम-एचआर 2020-22

मंजिल से गुजरकर ना जाने किस रहगुजर आया हूँ।
दिल ने तो कभी इजाजत दी ही नहीं मगर आया हूँ।

मेरे दो वक्त की रोटी की कीमत बस मजदूरी ही नहीं,
माँ-बाप, दोस्त यार, घर-बार ये सब छोड़कर आया हूँ।

उन्हें लगता है उनका कुचा मेरे घर के रस्ते में है,
कह दो उन्हें उन तक कर के मैं सफर आया हूँ।

दरिया समंदर खोजती है और चकोर चांद को,
मैं खोजता हूं सुकून सो उनके शहर आया हूं।

बार-बार देखता हूं आइना कि शायद मैं ये देख पाऊं,
कि उनके नजरों से मैं उन्हें किस तरह नजर आया हूं।

खुदा मिलेगा आजमाए हुए लोगों की दुवाओं में शायद,
ऐसे तो मैं मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर होकर आया हूं।

ज्ञान - पान

वरुण सोनी, पीजीसीबीएए03

सुदृढ़ साधना से सफल जीवन
सरसता से सजता रहे
मन मनन कर मस्तिष्क में
मधुर विचार भरता रहे।

हो दिव्य दृष्टि से दर्शित
हर शास्त्र में पारंगत
रहें कार्य में तत्पर हमेशा
कार्य को कार्यान्वित करें।

भर ज्ञान से विज्ञान से
मस्तिष्क को मेधावान करें
सृजन किया है जो सृष्टि ने
सुमेधा से नित श्रृंगार करें।

हर एक में ईश्वर बसा
हर एक को प्रभु ने रचा
यह ज्ञान सब जन को रहे
पड़ रही दानव दृष्टि जो दुनिया पर
मानव दहन करता रहे।

पग बढ़े पल भर ना रुके
पर्वत शिखर को चलता रहे
हाथ हो सब एक साथ
कोई भी पीछे ना रहे।

स्वस्थ सुष्ठ सुजन सदा
शुचि संस्कृति समृद्ध रहे
सुमधुरता संवरें सुनिकेतन
सुहृदयी शीर्ष सत्य रहे।

सुमनों से सुरभित वाटिकायें
विटप विपुल चहुँ ओर रहें
बसे शाख हर जीव सकुन से
छाँव तले विश्राम करे।

हर सरि में सुधा सा सलिल
कनक कुन्दन से वसुधा भरी रहे
कानन में केशरी कुंजर शोभे
मयुर कोकिल गान करे।

बरसे मेघ मुदित मही
मंडूक मधुकर मंजरी रहें
विचरित विहग वृन्द हरिण
वारि वारिज कुसुमित रहें।

बहे स्वच्छ समीर हर ओर
मानव श्वांस भर जीता रहे
रवि रश्मि से रोशन हमेशा
जग ये सारा खिलता रहे।

धवल से हिमगिरि से सदा
धरणी तरंगिणी से तरे
धर ध्यान धी में ये धरे
विश्व में सभी प्रज्ञा पान करें।

हारता बुजुर्ग

डॉ. उषा वर्मा, परिवार सदस्य, शिवम कुमार वर्मा, पीजीपी 2022-24

किसी घर के टीन शेड के नीचे
बैठा वह बुजुर्ग
हवा की नब्ज नाप रहा था
ठंड बढ़ रही थी
दिशाएं सुन्न हो रही थीं
हवा कातिल बन घूम रही थीं
एक पतले घिसे कंबल में
लिपटा निहत्था
अभिमन्यु सा लड़ रहा था
मौसम के दुश्मन से
अभिमन्यु सा नहीं, अपना सा,
क्योंकि उसके पास
देह का बल भी नहीं
अपनो का संबल नहीं
हवा में, ठंडे वातावरण में मृत्यु है
चारों ओर से घिरा वह भयभीत है
डरा है कि कहीं ठंड से ठिठुरती
यह सांस आखिरी ना हो!
पेट की अग्नि भी नहीं, भूखा है
बाहर की अग्नि भी नहीं ठंडा है
आदमी का संग साथ भी नहीं
अकेला है, बूढ़ा है

माँ क्या होती है

रा शंकरन, प्रबंधक, आईआईएम त्रिची चेन्नई परिसर

पैदा होते ही भूख लगी
माँ के दूध से पेट भरा ।।
बड़े होते ही अकल बढ़ी
पलट गई नीयत और आदत ।।

माँ की रोटी माँ का खाना
माँ के हाथ की मिठाई ।।
भूल गये आज के बच्चे
भूल गये माँ का प्यार ।।

स्विग्गी ज़ोमेटो हो गये दोस्त
पीज़्ज़ा, बर्गर, चाउमीन, मोमो ।।
बुलाओ कभी भी कहीं से भी
खाओ प्लास्टिक डिब्बा से ।।

जो माँ जानती है बच्चे की तबीयत
कोई और न जाने दुनिया में ।
उसके प्यार भरे रोटी दाल
करें ज़रूर बच्चों को खुशहाल ।।

कचरा खाके बिगड़ जाते हैं
जिम जाके करते कसरत ।
फिर वही कचरा फिर बिगड़ा
फिर जिम में खर्चा, कसरत ।।

तो माँ क्या होती है, हे बच्चों
सिर्फ जन्म देने की मशीन ? ।।

कविताएँ

मेधा भट्ट, परिवार सदस्य, प्रो. वासवी भट्ट

सारी कविताएँ
जो भूख पर लिखी गईं,
ज़्यादा तारीफ़ खा कर
प्रगाढ़ बेहोशी में हैं;

सारी कविताएँ जो
लिखी गईं स्त्री की दशा पर,
दिशा भ्रमित होकर
अभी भी मंच पर हैं;

सारी कविताएँ जो
राजनीति पर लिखी गईं,
इतना ऊपर चढ़ीं
पर कुर्सी के नीचे हैं;

सारी कविताएँ जो
अभी लिखी नहीं गईं,
किताबों में बसेरे को
वे क़तार में हैं...

अजीब दौर है
सब लिखा गया
सब पढ़ा गया
पर गया कहाँ?

शायद!!

कुछ को तालियों ने निगल लिया
कुछ तारीफ़ों ने चबा लिया
और कुछ
लुप्त होने की कगार में है।

हमेशा कविता ने
बचाया है हमें
अब हमें कविताओं को
बचा लेना चाहिए...

लिखना चाहता हूँ

ऋषभ ओझा, पीजीपीएम 2023-25

वैसे तो कोई कहानी नहीं है,
पर बस लिखना चाहता हूँ
या तो तसल्ली पूरी हो, या बेचैनी ही बरकरार रहे
उस तरह लिखना चाहता हूँ,
कि कोई मसला तो नहीं, बस आर-पार रहे
उस क़दर लिखना चाहता हूँ।

जैसे कोई आग बुझानी हो,
थोड़ी हड़बड़ी है, नुकसान भी हुआ हो
थोड़ा जज्बाती हूँ,
पर सब खाक होने का सुकून भी हो
इस क़दर लिखना चाहता हूँ
कि वो आग बुझानी हो,
मैंने सुना है लोगों को
'वो' शहर जलाने आये हैं।

बेचैनियाँ लिखना चाहता हूँ,
कुर्बानियां बहुतों ने लिखी है,
कई सारे वकील भी हुए हैं वज़ह भी लिखा था किसी ने..
कितने ही क़द छोटे हो गए
बगावत की सिलवटों से
शुक्रान, मैं तो बस हाल लिखना चाहता हूँ
ज़रूरी तो नहीं जवाब हो कोई,
समझोगे ना,
ऐसे कुछ सवाल लिखना चाहता हूँ..

कि कोई परछाईं छूनी हो जैसे,
या तलब सी मची हो
नामुमकिन सा है,
समेटना सब कुछ यहाँ..
कुछ लिख देने का डर है,
कुछ बच न जाये इससे भी घबराता हूँ,
इस दौर से डरना चाहता हूँ
पर वो भी फ़ितरत में तो नहीं है।
इस क़दर से लिखना चाहता हूँ,
कि ये सारी आग बुझानी हो
मैंने देखा है, 'लोगों ने शहर जला दिया है'

माँ का प्यार

रोहित जयसवाल, पीजीपीएम 2022-24

जन्म देती हैं हमें, प्यार से पालती हैं हमें,
जीवन की सारी चाहतें, माँ ही से पूरी होती हैं हमें।
बिना कोई उम्मीद के खड़ी, माँ की ममता की चादर,
उसके प्यार के साए में हम सुखी और समृद्धि से बदन्दर।

बिना मांगे दीवानगी से देती हैं अपना प्यार,
सब्र की बांध बनी है, माँ की ये विशेषता अनमोल।
जब भी थक जाते हैं, उनकी बाहों में हम सहारा पाते हैं,
क्योंकि माँ का प्यार ही है, सच्चा और अनमोल।

जिंदगी की हर कठिनाई, माँ के साथ सही लगती हैं हल,
उनका दुलारा साथ हो, तो डरने का कोई स्थान नहीं।
माँ की ममता अनमोल है, उसका प्यार सच्चा है,
जब भी उसकी गोद में बैठते हैं, भर जाते हैं मन का बिस्तर।।

समय

प्रियांशु भट्ट, पीजीपीएम 2023-25

हाथों से रेत सा फिसलता ये समय,
कुछ मेरे ख्वाबों को, कुछ तुम्हारी उम्मीदों को,
चीरता सा चला जा रहा है....
ना बोलता है ये, ना दिखता है ये..
बस खुद आगे बढ़कर, तुम्हे पीछे खींचता सा चला जा रहा है....

दिन और रात में रंग सा बदलता हुआ ये समय,
पूछ रहा कुछ आप से है, कह रहा कुछ हम से है,
"क्या तू भी मुझसे प्रगति कर पा रहा है?
या फिर जीवन की उलझनों में बंधकर,
बस रिहाई के गीत गा रहा है?

घड़ी की टिक-टिक से,
हर साँस का हिसाब सा माँगता हुआ ये समय!!
बता रहा कुछ तुझे है, समझा रहा कुछ मुझे है,
"निरंतर काम करने का सबसे बड़ा उदाहरण बनकर
सामने वो आ रहा है...
सोते, बैठे, और आराम फरमाते हुए मुझको जैसे
नीचा सा दिखा रहा है..."

वर्षों का रूप लेकर, अंकों में बदलता हुआ ये समय...
सुना रहा कुछ इनको है, समझा रहा कुछ उनको है,
बता रहा है कि, कल को पीछे छोड़
"मैं आज बनकर फिर तुम्हारे सामने आ रहा हूँ....
एक नई ऊर्जा के साथ,
मैं फिर तुम्हें अपनी बराबरी करने का मौका दिला रहा हूँ....
मौका दिला रहा हूँ....

सीधी-सादी राह पकड़

रूद्र गौतम, पीजीसीबीएफ02

सीधी-सादी राह पकड़ चुपचाप चला चल, कुछ मत बोल,
हीरा जितना कट-छँट जाता, उतना बढ़ता उसका मोल।

सब जन्म से ना मिलता जग में, कुछ कर्म भी करने पड़ते हैं,
इतिहास बदलते हैं वो ही जो, भाग्य से जाकर भिड़ते हैं,
सागर कब तैर के पार हुए हैं, लड़े बिना तूफ़ानों से,
क्या युद्ध जीतता कोई जब, तलवार ना निकले म्यानो से,
पर्वत नदिया सब शीश झुकाते, जब आँधी करती हिंडोल,
हीरा जितना कट-छँट जाता, उतना बढ़ता उसका मोल।

बाढ़

चारु त्रिपाठी, पीजीपीबीएम 2022-24

पानी ही पानी चारों तरफ दिख रहा है,
सुख दुख मीठा खरा सब मिल रहा है।
बच्चे बुड्ढे जवान इंसान कहाँ गए सब,
इतना बांटने के बाद भी,
ना जाने क्यों, सब एक ही रंग सा दिखा रहा है।

सुना था, लोग सफेद भूरे काले गेहूँये,
अनेक प्रकार के होते हैं
पर आज सिर्फ मटमैला फूल ही खिल रहा है।

इतने प्रयासों आंदोलनों के बाद भी,
जो इन चार कबीलों को एक ना बना सका,
आज दो तत्वों से मिल के एकाकी सा लग रहा है।
ना जाने क्यों, आज सब एक ही रंग सा दिख रहा है।

कुछ लड़ते थे बंद अधिकृत दरवाजों के पीछे,
मिट्टी और पानी की गंध के कश के बिना,
कुछ लिखते थे लचीले काग़ज़ों के ऊपर,
उनको भी ये पानी मटमैला कर रहा है।
ना जाने क्यों, आज सब एक जंग सा दिख रहा है।

प्रयास

श्रेया बनर्जी, पीजीपीएम 2022-24

एक रोज किसी ने कहा हमसे
अनजाने पानियों में डुबकियाँ लगाओ तो सही
अपनी जिन्दगी की प्यास को मिटाओ तो सही
कुछ यादें तुम अपनी बनाओ तो सही
कुछ यादें अपनो को भी दे जाओ तो सही
जाने का मन बना लिया है, तो कौन रोक पायेगा तुम्हें
पर जाने से पहले, एक बार मुस्कुराओ तो सही ॥

किताबों की दुनिया से निकलकर जब आये
लोगों से मिले और दोस्त बनाए,
दोस्त तो बनाए पर क्या दोस्ती निभा पाये
प्रेम है करा पर उसका मान रख पाये?
एक और मौका जिन्दगी को देकर तो देखों
अपने आंगन के बाहर की दुनिया को विचरण करके तो देखो

निकल गए इन अरमानों को साथ लिए,
बड़ी उम्मीदें लगाई तुमने अपने आप से
जब लड़ने की हिम्मत खत्म हो आई,
याद आया, कुछ वादे किए थे अपने माँ-बाप से
जब रात ढली और सूरज आया,
अकेली भीड़ों से लड़ना सिख लिया तुमने फिर से

आधुनिकता की दौड़ में

ध्रुविका नौटियाल, पीजीपीएम 2022-24

अधूरे सपनों की दुनिया, आंखों में बसी खवाहिशें,
भागते दौड़ते रास्तों पर, खो गई सत्यता की भेंट।

जीने की मशीन चल पड़ी, रुटीन की गलियों में खो गई,
परिस्थितियों की बाधाओं में, पीछे जीवन को छोड़ गई।

सिर्फ मशीनों की दिनचर्या, खड़ा करती ज़िन्दगी का मेला,
भूल गए हैं वे लम्हे, जब अभी तक था दिल खिला।

आधुनिकता के जंजाल में, खो गई वो पुरानी सदियाँ,
प्राकृतिक सौंदर्य की खोज में, बिता रहे हैं वो सफर रात दिन।

धूप-छाँव के खेल में, खो रहा है इंसान अपना अस्तित्व,
आधुनिकता के जलते दरिया में, बूझ रहे हैं वो जीवन का रहस्य।

स्वयं को खो रहा है वो, दौड़ते भागते ज़िन्दगी की तरफ,
आधुनिकता के गहरे गहरे समुंदर में, डूबते जा रहे हैं वो विचारों के दरिया में।

अधूरी खोज में उलझ, रह रह कर वो बिखर रहा है,
आधुनिकता की भीड़ में खोया, जीवन का अर्थ, वो ढूंढ रहा है खुद को।

ब्रेन ट्रेन की रफ्तार में, गुम हो रहा है वो अपने सपनों में,
भूल रहा है वो वक्त की महत्ता, और ज़िन्दगी के अनमोल पलों को।

आधुनिकता के दौड़ में, भूल जा रहा है वो अपनी मूलभूत शक्ति,
ज़िन्दगी के रंगीन फ़ूलों को, और प्रकृति के रमणीय सज़ावटों को।

आधुनिकता के पर्वतीय सफ़र में, खो गई वो मानवता की दिशा,
बन गए वो मशीनों के बंधन में, भूल गए वो मुस्कान की अमृत लिपियाँ।

आधुनिकता के चक्रव्यूह में, प्रवेश कर गए वो भविष्य की गहराईयों में,
भूल गए वो ज़िन्दगी की एक बार नहीं, हर पल जीने की कला को।

धीरे-धीरे खो रहा है वो, अपने असली स्वरूप को भूलकर,
आधुनिकता के जाल में फंसा, जीवन का वास्तविक अर्थ खो रहा है वो।

अपने अस्तित्व को खो रहा है, बन गया है वो एक मशीन,
भूल रहा है वो मानव होना, और स्वयं को खो रहा है वो।

ऐ पगले!

वामसी कोटारू, पीजीपीएम 2019-21

ऐ पगले! तारों को ढूँढने जो तू चला, कहीं अपनी आंखों की चमक ना भूल गया?
आसमान को छूने जो तू चला, कहीं इस मिट्टी की खुशबू ना भूल गया?
कहीं दूर तिजोरियां खोजने जो चल पड़ा पगले, कहीं तेरी खुशियों का खज़ाना ना छोड़ गया?
देख तेरे प्रदेश में, बाज़ारों के परिवेश में वो मासूम चेहरे,
उन चेहरों में छुपी पटिल सूत्रों से जुड़ी अनोखी कहानियों को देख।
चेहरों की लहरों में तो मैं भी अकस्मात से बह गया, होश आई तो हठात से थम गया, ज़रा तू भी थम जा
देख जो मैंने देखा, कि हर चेहरे की हर नज़र में एक सवाल था, एक बेचैनी, कई ख्वाबों का बवाल था।
पूछ जो मैंने लिया, कि कहां भागे चले हैं ये सब,
अरे, पर भाग तो तू भी रहा है पगले।
किस दिशा में जा रहा, क्या हैं तू ढूंढ़ रहा पगले?
एक हँसी एक सुकून जो दिल चाहता है, क्या वो कहीं पहुंच के मिल जाता है?
राहों की बाहों में पला है, मंजिल में क्या पाएगा तू?
दूर जो पाने निकला है, फिर भीतर ही आएगा तू।
हँस दे ऐ पगले, दिल से खिल जाएगा तू।।

एक कहानी : भोपाल

श्रेया गोखले , पीजीपीएम एचआर 2022-24

वो हवा का झोका, वो चाँद का दीदार,
वो झील के किनारे लहरों की मनुहार।
वो तंग बस्ती, वो खुले मैदान,
वो चाँद का चकोरा और मैना की पदचाल।
वो पुराणी रियायत, वो तहज़ीबी रियायत,
वो नवाबों का दौर और वो बेगमों की नज़ाकत।
वो कपड़े का बटुआ, वो पान का पत्ता,
उस पत्ते पर कत्था और लबों पर मुस्कान।
वो सुलेमानी चाय, वो सुकून एहसास,
वो यारों की मस्ती और जवानी का आगाज़।
वो शायर की नज़्में, वो काज़ी की कलमे,
वो शाम की आज़ान और दिलों की सुरताल।
वो ज़ुबान पर हंसी, वो आँखों में सपने,
वो दिल में जोश और साथ में अपने।
वो शाम भी क्या मतवाली थी,
ये बात भी क्या निराली है,
वक्त के पैबन्दों से आज़ाद
ये भोपाल की कहानी है।

खोल दो वातायनों को

संजीव केजी गर्ग, पीजीसीबीएफ02053

खोल दो वातायनों को आने दो खुली हवाएं।
आजादी के ताजे झोंके महकने दो फिजाएं।।

हमें भी हक जीने का है, हम भी चाहते हैं झूमना।
मस्त होकर उचक कर, अपने पैरों पर गगन चूमना।।
तोड़ के बंधन सारे जग के, आओ झूमो नाचो गाओ।।

खोल दो वातायनों को आने दो खुली हवाएं।

अब झरोखे छोटे लगते, सांस हमारी घुटती जाती।
ना जाने किस-किस की सांसे, कैसे कैसे मिलती जाती।।
अधर तुम्हारी भी हैं हिलते, हम भी कुछ कहना है चाहते।
मरघट सी चुप्पी फिर तोड़े एक दूजे को कहे सुनाएं।।

खोल दो वातायनों को आने दो खुली हवाएं।

नाम इसे कुछ देना चाहते, वही पुरानी पुरातन पंथी बातें।
फिर से जकड़े जंजीरों में, उलझे हुए लकीरों में।।
आओ जंजीरें हम तोड़ दें, सभी पुरातन ढोंग छोड़ दें।
पचहत्तर साल की आजादी है, आजादी का जश्न मनाए।।

खोल दो वातायनों को आने दो खुली हवाएं।।

प्राकृतिक संगीत

बबीता जी, पीजीपीएम 2022-24

नीले आकाश के नीचे इतने विशाल,
जहां प्राकृतिक अद्वितीयता है अपार।
पर्वत ऊँचाइयों की ओर पहुँचते हैं आकाश को,
नदियों की खुशियों से नृत्यरंग में खो।

जंगल ब्रीज को अपने रहस्यों की बात करते हैं,
पत्तियाँ महसूस होती हैं संगीत की आवाज़ों की तरह।
फूल रंगों से दुनिया को रंगीन बनाते हैं,
सुबह की ओस एक हीरे की तरह चमकाती है भूमि को।

सूर्योदय और सूर्यास्त, एक रंगीन ख़बर,
रंगों का मिश्रण प्रकाश के तस्वीर में बिखरता है।
तारे ऊपर चमकते हैं काले आकाश में,
चाँद की प्यारी चमक, एक शांतिपूर्ण दृश्य।

समुंद्र की लहरें ताल में नृत्य करती हैं,
पूरी रात खड़ी होती है लहरों की रेले।
मरुस्थल में क़िस्मतों की बातें बिखेरी होती हैं,
प्राचीन दृश्य, एक शुष्क भूमि की कहानियाँ।

प्राकृतिक अद्वितीयता, एक अनमोल ख़ज़ाना,
हर पल उसकी सुंदरता उजागर होती है।
ऊँची शिखरों से समुंदर के तल तक,
जीवन की संगीतमय एकता, हमेशा के लिए।

आओ, इस दुर्लभ उपहार को महत्वपूर्ण बनाएं और संरक्षित करें,
क्योंकि प्राकृतिक अद्भुतताएँ, अतुलनीय हैं।
इसकी गोद में, हम अपनी जगह पाते हैं,
एक संगठित अस्तित्व, एक पवित्र स्थान में।

बाल ही तो है...

प्रीति शर्मा, परिवार सदस्य, प्रो. कृष्णा तेजा पेरन्नागरी

ये जो टूट कर गिरा है ज़मीन पर वो सिर्फ बाल ही तो है
ये जो आँखों के आगे है ये प्यार के धागे नहीं है
बस बाल ही तो हैं जो किसी बीमारी में या किसी उम्र में साथ छोड़ सकते हैं

जिन्हें हेयर बैंड से बांधा है वो कोई इरादा नहीं है
एक सहूलियत है ताकि मैं इत्मीनान से काम कर सकूँ

और ये जो खुले खुले हैं बस एक स्टाइल है अच्छा दिखने के लिए
या कभी पार्टी में जाने के लिए

ये बाल ही है इससे कोई रिश्ता अगर सुलझता है
तो फिर वो रिश्ता ही गलत है
एक बिखरा हुआ दिन यूं बालों से कहां संवरता है

ज़िम्मेदारी एक उस कंधे पर एक इस कंधे पर वो बिना बालों के भी लोग निभाते हैं
मैं इन पर हाथ फिराती हूं तो खुद को कुछ नहीं बताती हूं

और ये जो वापस आ गए हैं, अच्छी बात है, पर ये कोई सपने नहीं
समाज की उम्मीदें हैं औरत से अच्छा दिखने की, जिन्हें हम ख़ुशी से मानते हैं

इन्हें बस बाल ही कहना ये मेरी पहचान नहीं है
ये मैं नहीं हूं...मेरा हौसला मेरा खुद से ईमानदार होना और बहुत कुछ मैं हूं

माँ सिर्फ तुम हो

राणाजी, परिवार सदस्य, प्रो. रामेन्द्र प्रताप सिंह

माँ सिर्फ तुम हो
और कोई नहीं है
हमारे लिए।।
सोचा था जीत लेंगे
सारे जहान को
नजर इसी आसमान पे
छोड़ चले तेरे आँगन को
आज चलती है दुनिया
साथ मेरे इशारों पर
आज होती हैं गलियाँ
रौशन मेरे नजारों पर।
पर मुझको आता है सुकूं
रात की परछाइयों में
तेरी गलियों में
अपने आँगन में
क्योंकि रात आती है लेकर
परछाइयाँ बचपन की
जहां गोद में सर मेरा लेकर
गाती है लोरियां तू रात भर
और जी लेता हूँ मैं रोज जी भर

माँ सिर्फ तुम हो
और कोई नहीं है
हमारे लिए।।

जीत

सिमरन फारूकी, पीजीपीएम 2023-25

नाप ले ये ज़मीं, नाप ले आसमां,
अपनी कमजोरियों को तू ताकत बना,
बन के काँटे जो राहों में आएं कभी,
फूंक दे ख़्वाहिशों का तू वो आशियां,

हौसला कर बुलंद अपने पर तू फ़ैला
मंज़िलों पर तेरी पहुँच जाएगा तू,
जीत जाएगा तू, जीत जाएगा तू,
इस ज़मीं क्या फ़लक पर भी छाएगा तू

राहों में काँटे हैं पर तू डरना नहीं
अपने ज़ख्मों को कभी तू भरना नहीं
तेरी मंज़िल से तुझ को जो दूर करें
ऐसी राहों से तुझको गुजरना नहीं

ख़त्म होगी तेरी जब ये आस-ए-मरहम
खा के लाखों ज़ख़्म मुस्कुराएगा तू
जीत जाएगा तू, जीत जाएगा तू
इस ज़मीं क्या फ़लक पर भी छाएगा तू

भीड़

मोनिका, पीजीपीएम 2023-25

ओह राही, तू कहां निकल चला,
शहर की भीड़ में,
कहां गुम हो चुका है,
टिमटिमाती शहरों की रोशनी में,
कहीं खुद को खो ना देना तुम,
दुनिया की इस भीड़ से बाहर देखना तुम,
मृगतृष्णा जैसी इस दुनिया में,
कहीं डूब ना जाना तुम,
तलाशते है वो भी इस भीड़ मे एक सुकून,
जो रहते हैं अपने घरों से दूर,
किसी के लिए है ख्वाबों का आशियाना ये शहर,
किसी के लिए है महज एक ईमारतों का शहर,
मंज़िलों के लिए तुम भीड़ में ना जाना,
रास्ते की खोज करना,
रास्ते नये जरूर होंगे,
मगर ख़ूबसूरत होगा सफ़र,
शहर की भीड़ में कहीं खो ना जाना तुम।

चिड़िया रानी, मत आना मेरे आँगन

अचित सोनी, पीजीपीएम 2023-25

ओ चिड़िया रानी
मत आना अब मेरे आंगन
रहना तुम वन-उपवन कानन
पहले जब तुम आती थी
घर के सूने कोने में
अपना नीड़ बनाती थी
ची ची के मधुर स्वरों में
अब न भोर सजाना
ओ चिड़िया रानी
मत आना मेरे आँगन
रहना तुम वन-उपवन कानन।

यहाँ मनुज ने
अपने ही अमृत दाने को
विष कर डाला
'भांति-भांति के कीटनाशकों
और रसायन से भर डाला
मेरा ही अमृत अन्न
अब विष तुल्य हो गया
ऐसे दाने-दुनके अब
मत चुगने आना
तू अब रह जाना अपने वन कानन

जब भी मन होगा
तुझसे मिलने आएंगे
अपने बच्चों से भी
तुम्हें मिलवाएँगे
उन्हें बताएंगे
ये चिड़िया है
जो पहले आती थी
घर आँगन
गीत सुनाती थी
मन भावन।
तुम अब वहीं खुश
चहकती रहना
महकती रहना
अपने वन कानन में
ओ चिड़िया रानी
अब मत आना मेरे
घर आँगन में
रह जाना तुम
वन-उपवन कानन में।

अनंत प्रेम की प्रतिमा

प्राची गुप्ता, पीजीपीएम 2022-24

माँ, तू अनंत प्रेम की प्रतिमा,
सदैव होती है तू दिल की धरोहर।

जन्म से पहले से ही तू थी साथ,
जीवन की नई शुरुआत थी तू ही साथ।

संसार के धुंधले मार्ग पर जब,
अकेले खड़ी हुई थी तू जब।

गर्म छाया बन आँचल तेरा,
हर दर्द से सींचा था तू जब।

प्यार की उत्सवी आंधी बन,
बच्चों को लिया गोद में जब।

जीवन की रही तू राह दिखाने,
जब तक न संसार की धूप आये।

खुशियों के गीत गाती थी तू जब,
दर्द के रास्ते आँसू बहाये।

माँ, तू तो अनंत प्रेम की धारा,
दुनिया के वो तारे हैं जब।

जब आँचल में छुप जाते हैं हम,
तू ही देती है हमें सहारा।

जीवन की माला बुनती जब तू,
हर मोम को बांधती थी जब।

धैर्य और स्नेह से संभाल जब तू,
खुशियों के फूल बिखराती थी जब।

जन्म-जन्म की बंधन बांधे हैं हम,
तू ही तो है माँ, अनंत प्रेम की प्रतिमा।

जल उपलब्धता की समस्या एवं आपूर्ति के उपाय

राज कुमार, पिता, अनुराग राजकुमार पीजीपीएम 2022-24

जल, इस धरती या किसी भी ग्रह जहाँ पर जीवन होने की संभावना है, एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल की उपलब्धता का सीधा संबंध जीवन की संभावना से है। पृथ्वी पर विभिन्न प्राणियों के पाए जाने का मूल कारक और कारण जल की प्रचुर उपलब्धता ही रहा है। पृथ्वी पर जीवन-चक्र की आवश्यकतानुसार समुचित जल-चक्र भी उपलब्ध है। मानव सभ्यता का विकास जल स्रोतों के आसपास से प्रारम्भ हुआ। प्राचीन काल में कम आबादी और नगण्य औद्योगीकरण के कारण स्थानीय पारंपरिक विधियाँ आवश्यकतानुसार जल-उपलब्ध कराने में सक्षम थी। बढ़ती आबादी, तेज औद्योगीकरण एवं जल उपलब्धता और उपयोग के प्रति आमतौर पर उदासीनता के साथ-साथ मौसमी बदलावों के कारण जल की मांग में भारी बृद्धि हुई है। पृथ्वी पर उपलब्ध जल का तीन प्रतिशत ही स्वच्छ जल है जिसमें से दो तिहाई जल, बर्फ की चट्टानों तथा हिमखंडों में बंद है, अतः विश्व में उपलब्ध कुल स्वच्छ जल मात्र एक प्रतिशत से भी कम मानव जाति के उपयोग के लिए उपलब्ध है। वैसे तो प्रकृति वैश्विक तौर पर हमारी जल आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम है परन्तु एक तरफा विकास की होड़ में कई स्थानीय समाज के वांछित जल आपूर्ति में असमर्थ होने लगी है जिसके दुष्परिणाम से जल की उपलब्धता में क्षेत्रीय स्तर पर गंभीर असुंतलन के मामलों में दिनों -दिन बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। बदलते पर्यावरण के कारण मौसम का क्षेत्रीय एवं सामयिक विस्तार भी प्रभावित हुआ है।

भारत जैसे कृषि प्रधान एवं विकासशील देश के लिए जल की समुचित एवं सामयिक उपलब्धता का महत्व और भी अधिक है। वर्तमान तकनीकी विकास के वावजूद देश के विभिन्न भागों को एक साथ सूखे और बाढ़ की समस्या का सामना करना चिन्ताजनक स्थिति है। देश में औसत वर्षा होने पर भी कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ की स्थिति मिलती है। साथ ही समान औसत वर्षा वाले दो क्षेत्रों में से एक में खुशहाली तो दूसरे में हाहाकार पाया जाता है। ऐसी स्थिति अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव डालती है एवं सामाजिक विस्थापन जैसी दुःखद स्थिति पैदा करती है। देश को प्रगति पथ पर अग्रसर रखने हेतु हर क्षेत्र को समय पर समुचित जल उपलब्ध कराना संबंधित विशेषज्ञों के लिए बड़ी चुनौती है।उपरोक्त समस्याओं को जल संसाधनों के उचित प्रबंधन द्वारा काफी हद तक दूर किया जा सकता है। किसी भी संसाधन के सफल प्रबंधन हेतु उस संसाधन की उपलब्धता तथा जिस क्षेत्र में उसका उपयोग होना है उसकी उपयोगिता की सही जानकारी होनी चाहिए।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लम्बी अवधि की नीतियों एवं योजनाओं के समयबद्ध कार्यान्वयन के साथ जल संसाधन के संरक्षण, संवर्धन, संचयन, भंडारण, शुद्धिकरण, शोधन, संवाहन एवं प्रभावशाली उपयोग की नई और दक्ष विधियों के उपयोग की आवश्यकता है। क्षेत्र विशेष की जल आपूर्ति के लिए उपयोगी पारंपरिक प्रणालियों को पुनर्जीवित करना एवं कृषि पद्धति में जरूरी बदलाव लाना भी जल उपलब्धता में सुधार लाने में सहयोगी हो सकता है। क्षेत्र विशेष के लिए उपयुक्त फसल एवं उद्योग का चुनाव परंपरा की बजाय संबंधित विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित किया जाना जरूरी है। आदर्श रूप में, जल संसाधन प्रबंधन की योजना इस प्रकार से होनी चाहिए कि जल का बेहतर ढंग से उपयोग हो और सभी उपभोक्ताओं को जल की आपूर्ति उनकी जरूरत के अनुसार हो तथा पर्यावरणीय प्रभावों का असर कम से कम हो।

एक एमबीए छात्र के रूप में अर्जुन और उनका ध्यान: महत्वपूर्ण उदाहरण

अनुराग राजकुमार, पीजीपीएम 2022-24

एमबीए एक ऐसा प्रोग्राम है जो नए समय के प्रबंधन के ताजा तथ्यों और विपणन के गहरे सिद्धांतों को समझाने का एक साधन है। एक एमबीए छात्र को सफल बनने के लिए अनेक गुणों की आवश्यकता होती है, जिनमें से ध्यान और एकाग्रता सबसे महत्वपूर्ण गुण होते हैं। इसलिए, हम इस लेख में एक विशेष उदाहरण के रूप में अर्जुन की कहानी को देखेंगे और देखेंगे कि एक एमबीए छात्र के रूप में ध्यान की उपयोगिता कैसे होती है।

अर्जुन एक अभिनव और तेजस्वी एमबीए छात्र थे, जो अपने करियर को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के इच्छुक थे। उनके लिए प्रबंधन का दृष्टिकोण रखना एक महत्वपूर्ण बात थी, जिससे वे अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ रूप से बढ़ सकें।

1. उत्साह और दृढ़ संकल्प: अर्जुन का उत्साह और संकल्प उनके लक्ष्य को प्राप्त करने में उन्हें सहायक साबित हुए। एमबीए छात्र को सफलता के लिए आवश्यकता है उत्साहपूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की चाह और संकल्प। इस उत्साह के साथ, अर्जुन ने अपने पढ़ाई और प्रोजेक्ट्स में लगन दिखाई और अच्छे अंक प्राप्त किए।

2. ध्यान और संगठना: अर्जुन ने अपने ध्यान को संगठित किया और अपने अध्ययन को उच्च स्तर पर लाने के लिए एकाग्र रहने का प्रयास किया। एमबीए छात्र को अपने अध्ययन की सफलता के लिए संगठित रखने की आवश्यकता होती है ताकि वे अपने कोर्स के साथ साथ एक्सट्रा-करिकुलर गतिविधियों में भी शानदार प्रदर्शन कर सकें।

3. विद्यार्थी संघ का सहयोग: अर्जुन ने विद्यार्थी संघ के साथ उनके सहयोग और मिलजुल के माध्यम से सभी विद्यार्थियों के साथ संबंध बनाया। विद्यार्थी संघ के साथ मिलकर उन्होंने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपने अनुभवों को साझा किया बल्कि अन्य विद्यार्थियों से भी नए ज्ञान और विचारों को सीखा।

4. समय का प्रबंधन: अर्जुन के पास समय का अच्छा प्रबंधन था, जिससे वे अपने अधय्यन के साथ साथ अपनी हॉबिज एवं शौक को भी समय दे पाते थे। एमबीए छात्र को समय के प्रबंधन का माहिर होना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि वे कई चुनौतियों का सामना करने के लिए समय के साथ-साथ एक संतुलित जीवन भी जीना चाहते हैं।

अर्जुन की कहानी से हमें सीखने वाली बहुत सी बातें हैं, जो एक एमबीए छात्र के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनका उत्साह, ध्यान, संगठन, सहयोग, और समय के प्रबंधन के दृष्टिकोण से एक एमबीए छात्र को सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचाने में मदद मिलती है। एक एमबीए छात्र को अर्जुन की तरह सकारात्मक मार्गदर्शन लेकर अपने लक्ष्यों की दिशा में प्रगति करनी चाहिए और उन्हें सफलता की चोटी पर ले जाने के लिए ध्यानवान रहना चाहिए।

'नमस्'-एक आत्मिक बोध

नीरज 'नमस', परिवार सदस्य, प्रो. जंग बहादुर सिंह

नमस्' नाराज है, ये भूतकाल में कहा गया एक वाक्य हो तो इसकी प्रतीति कैसे हो। उसकी नाराज़गी का आलम ऐसा है कि बाप, दोस्त, भाई-भाभी, प्रेयसी कोई नहीं बचा। कोई नहीं बचा उसके असफलता और विफलता के ताप से भी, किसी के माथे पर पसीना आया तो किसी के आँखों में पानी और ज्यादातर लोगों को 'नमस्' की विफलता से खुशी का एक कारण मिल गया। लेकिन 'नमस्' इन सभी द्रवित एवं कठोर क्षणदा से अचंभित नही है। वह मानता है कि ये घटनाएँ प्राकृतिक है। ये विकसित पशु का स्वभाव मात्र माना जाएगा।

'नमस्' प्रारब्ध से नाराज़ है, क्यों नाराज़ है? खुद के अस्तित्व से, इस अस्तित्ववाद से जो मानव-स्थिति को पीड़ाजनक मानता है, सगर्भ से होती बार बार उपेक्षा से, अपनों से लगे यकायक आक्षेप से, उन सवालों से जो लगातार उसके भीतर बलबलाते रहते हैं।

उन मक्कारियों से जिनको स्वीकार करने का साहस आ गया।

उसका मानना है कि अगर इसके कारण का एक विस्तृत स्वरूप देखा जाय तो ये अचानक नहीं हो रहा, पश्चिमी सभ्यता के द्वारा षड्यंत्र कई सदियों से हो रहा। हमारे हीरे मोती जा चुके, हमारी विद्या जा चुकी, हमारी तकनीक जा चुकी, हमारे मस्तिष्क जा चुके हैं, हमारे पास एक चीज बची है जिसे छीनने के लिए पश्चिमी सभ्यता पागल है और वो चीज है हमारा परिवार और पारिवारिक व्यवस्था, संस्कार। अब इस पर डाका डालने की कोशिश है। सीरीज, सिनेमा और टीवी के माध्यम से हमारे घरों में धीरे धीरे जहर पहुंचाया जा रहा है।

'नमस्' नाराज़ है कि परिवार की छाँव के नीचे सब कुछ ज्यों का त्यों अविकल प्रांजल सत्य क्यों नहीं कह दिया जाता और क्यों उसे अपनी सुभीता से सभ्यता और आत्ममुग्धता की चिकनाई के साथ लपेट कर स्वघोषित सत्य परोसा जाता है। वो नाराज़ है क्योंकि जब वह नाराज़ होता है तब उसका ठीक ठीक मायने कोई समझ क्यों नहीं पाता है, क्यों कोई नाराज़गी और क्रोध को सदा एक दुर्गुण, विकार और स्वभाव की एक विकृति के रूप में देखा जाता है। नाराज़गी में बुद्धि साथ छोड़ देती है और बाद में पश्चताप के सिवा कुछ नहीं बचता, ऐसा ज्ञानी लोग बोल सकते हैं। हो सकता है ये सत्य भी हो लेकिन 'नमस्' का मानना है कि कभी-कभी नाराज़गी निर्बलता और अहं का द्योतक नहीं रहता, अपितु यह कर्तव्य भी हो सकता है, वो इसकी सत्यता को प्रमाणित नहीं करता।

यदि कोई आप के परिवार व्यवस्था को चुनौती दे तो उस पर नाराजगी व क्रोध करना कर्तव्य की श्रेणी में आता है। यद्यपि वह आप का 'सगर्भ' ही क्यों न हो। इन परिस्थितियों में कोई भी नाराज़ हो सकता है, यह आसान भी है लेकिन सही सीमा में, सही समय पर, सही उद्देश्य के साथ और सही तरीके के साथ नाराजगी दिखाना सभी के बस की बात नहीं और 'नमस्' के लिए शायद यह आसान हो गया था। उसका मानना है

कि नाराजगी एक चिंगारी के रूप में मौन की राख में दबी रहे तो इसकी आंच में जाने कितने उद्देश्य तप जाते हैं। यदि परिवार में भी कहीं भी अन्याय हो रहा हो, फिर भी नाराजगी रूपी रोष न जागे तो यह जानिए की प्राणों को पोषित करने वाली जीवनदायिनी वायु पूरी तरह से मलिन हो चुकी है।

'नमस्' का मानना है कि आत्मा जब हृदय की गहराई तक घायल हो जाती है, तो वे अपनी सर्वश्रेष्ठ कुशलता का प्रदर्शन करती है। वास्तव में सकारात्मक नाराज़गी वह विप्लव है जो हर प्रकार के कचरे को बहा देने में समर्थ होता है; बस आवश्यकता होती है इसे नियंत्रित रखकर लक्ष्य साधने की। यहाँ ये भी कहना जरूरी है कि सकारात्मक और सत्यता की परिभाषा व्यक्ति और काल पर निर्भर हो सकती है। पर, आप से शुरुआत में कहा गया था कि ये भूतकाल की बात है, ये पुराने वाक्य हो चुके हैं। क्योंकि पहली दफा उसने अपने आप को ठीक-ठीक पहचाना। उसे पता चला कि इस दुनिया में कमजोरी सबसे बड़ा पाप है, अगर आप चाहते हैं कि आप के परिवार की उपेक्षा न हो और आप पर कोई यकायक आक्षेप न लगा सके; तो आपको हर प्रकार की कमजोरी को दूर करना होगा। 'नमस' अपने आप पर कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है। वह एक जादू से परिचित होता है जिसका नाम है "रास्तों पर ध्यान लगाना न कि सीधे मंजिल पर"। अब उसके सारे नाराजगी रूपी फोड़े एक एक कर फूटते हैं, मवाद बाहर आती है, कलुष और नाराज़गी कुछ कम होती है और वह क्षमा मांगना और देना सीखता है, पर यह एक निरंतर प्रक्रिया है, रोज़ सूरज निकलता है, रोज सुबह जिंदगी का एक नया अध्याय शुरू होता है, रोज सुबह कर्मधर्म रास्तों पर आगे बढ़ता है। अब उसमे अश्लील, अशालीन, आसंस्कारी, अपारिवारिक अवसर को ठुकराने का साहस है। वह अपनी आखिरी समर्पण में भी अपने दोस्तों के साथ रहना चाहता है जो कम्बख्त बहुत कम बचे हैं।

"बन्धन की बाध्यता उसने छोड़ दी है"

जागिये तभी होगा सवेरा

अंकित सिंह, परिवार सदस्य, प्रो. जंग बहादुर सिंह

कैसी उलटबाँसी है। सोएं भी और नींद भी न आए। बात बहुत गूढ़ है। मगर यह उन्हें कैसे समझ आ सकती है, जो जागते हुए भी सोते रहते हैं। हम तो जागते हुए भी नींद में रहते हैं। फिर हमसे सोते हुए जागने की उम्मीद भी कैसे की जा सकती है। सोते हुए भी जागरण अवस्था में होना तो कठिन साधना के बाद ही संभव हो सकता है। हम तो हर पल अचेतावस्था में रहने वाले लोग हैं। जानते बूझते, पूरे होशो- हवास में गलतियां करते रहते हैं। उन गलतियों पर पछताते भी हैं। मगर फिर गलतियां करते हैं। बाज नहीं आते गलतियां करने से। फिर इतराते फिरते हैं कि इंसान तो गलतियों का पुतला है, उससे गलतियां होना स्वाभाविक है। जब हम जीवन की दैनिक गतिविधियों में सामान्य सजगता नहीं बरत पाते, उन्हें जागते हुए भी सही ढंग से नहीं कर पाते, तो नींद में चैतन्यता भला कहां से ला पाएंगे। हम तो बहुत सारे काम नींद में ही करते जाते हैं।

जागरण केवल आंखें खोल लेना भर नहीं होता। जागरण का अर्थ है पूर्ण चैतन्यता। जो चैतन्य है, वह तर्क करता है। वह जो कुछ करता है, उसकी वजह जानता है। मगर हम तो बहुत सारे काम बस करते जाते हैं। उनकी वजह हमें पता ही नहीं होती। जिसकी वजह पता नहीं, वह तो बेवजह ही होगा। हम बेवजह ही बहुत कुछ करते जाते हैं। एक आदत-सी बन गई है बहुत सारे कामों की, इसलिए किए जा रहे हैं। वह आदत हमारे भीतर परंपरा से पोसी हुई है। अगर उन आदतों की वजह समझ लें, तो शायद वे छूट भी जाएं। सुधर तो अवश्य जाएंगी। मगर हमने कभी किसी काम की वजह जानने की कोशिश ही नहीं की। सुबह उठते हैं, चाय पी लेते हैं। नहा-धो लिया, नाश्ता कर लेते हैं। दोपहर हुई, खाना खा लिया। रात को खाना खा लिया और सो गए। फिर अगले दिन उठे, वही दिनचर्या। बरसों से यही करते आ रहे हैं। कभी यह भी सोचने की कोशिश नहीं की कि खाना खा क्यों रहे हैं। भूख है भी या नहीं। खाने का वक्त हो गया है, बस इसलिए खा लिया। बाजार गए, किसी दुकान की सुगंध नथुनों में पहुंची, जीभ लपलपाई और खा लिया। कोई वजह नहीं, बस खा लिया।

जीवन के न जाने कितने ऐसे काम बस यूं ही हम बेवजह करते जा रहे हैं। बहुत सारे काम हम इसलिए करते हैं कि हमारे बाप-दादा वही करते आए थे, बहुत सारे काम हम इसलिए करते हैं कि समाज के बहुत सारे लोग उसे करते हैं। तर्क करना जरूरी नहीं समझते कि अमुक काम हम कर क्यों रहे हैं, अगर उसे न करें तो हमारे जीवन में क्या फर्क आ जाएगा। अगर तर्क करें, तो बहुत सारे बेवजह के काम करना बंद कर दें। बहुत सारे काम तो हम दिखावे के लिए भी करते हैं। हमारा पड़ोसी जैसा करता है, हमें उससे आगे बढ़ कर वही काम करना है। शादी-ब्याह में पड़ोसी ने पांच लाख रुपए खर्च कर दिए, तो हम होड़ में शामिल हो गए कि उससे दोगुना करके दिखाएंगे। इसी दिखाने की होड़ में हम न जाने कितनी चीजें बेवजह जुटा डालते हैं, उनमें से बहुत सारी चीजें बेवजह बर्बाद कर डालते हैं। अगर ठहर कर सोच लें कि हम ऐसा न करें, तो क्या फर्क पड़ जाएगा, तो शायद बहुत सारी व्यर्थ की चीजें बर्बाद होने से रोक सके। इस तरह कुदरत को थोड़ा कम नुकसान पहुंचा सकें। मगर हम हैं कि जागना चाहते ही नहीं। नींद में ही चले जा

रहे हैं। एक तरह की बेहोशी की हालत में जीने में ही हमें आनंद आने लगा है। भोजन, भवन, वसन में ही हमारे सारे जीवन की मशक्कत हुई जा रही है। इससे अलग भी जीवन का कोई अर्थ है, हम जानते ही नहीं, जानना भी नहीं चाहते। इसे न जानने के हमारे पास पक्के तर्क हैं। हम बड़े सहज भाव से कहते हैं कि कर्म करना हमारा अधिकार है, सो करते जाओ। मगर कर्म वास्तव में है क्या, कभी जानने का प्रयास नहीं करते।

जब जानते बूझते हमने जीवन की परिभाषा बदल दी है, पूरे होशो हवास में उन तमाम चीजों को जीवन का जरूरी सरंजाम बना डाला है, जिनकी वास्तव में जीवन के लिए कोई जरूरत ही नहीं होती, तो फिर हम जागेंगे कैसे। हमने तो नींद में ही चलना सीख लिया है। जब नींद में चले ही जा रहे हैं, तो उससे बाहर निकलने की जरूरत ही क्या है। जागने की जरूरत ही क्या है।

जो ध्यान करते हैं, वे जानते हैं कि ध्यान में जाना एक प्रकार से नींद में ही जाना है। वह नींद जागरण की नींद होती है। पूर्ण चैतन्यता की अवस्था होती है। जो पूरी तरह चैतन्य है, वह नींद में भी चैतन्य है। उसे अपनी हर सांस की ख़बर है। उसे अपने हर काम के बारे में पता है कि वह जो कर रहा है, क्यों कर रहा है और उसे किया जाना क्यों जरूरी है। उस चैतन्यावस्था तक पहुंचने का रास्ता दुनियादारी की नींद से होकर नहीं जाता। उसके लिए सबसे पहले अपनी नींद को समझना पड़ेगा कि वह क्यों जरूरी है और कितनी जरूरी है। नींद की प्रकृति क्या हो। नींद में भी जागरण कैसे संभव है, “इसका तरीका आपको खुद ढूंढना होगा।”

सच्चा होना हमेशा आनंदमय होता है

हेमलता शिवकुमार, कार्यालय सहायक

वेद और उपनिषद भगवान को सत् (सत्य), चित (चेतना जो ज्ञान देती है), और आनंद (आनंद) के रूप में परिभाषित करते हैं। अतः ईश्वर का एक गूढ़ सत्य है। इसीलिए भगवान को सत्य नारायण कहा जाता है। ईश्वर सदैव पूर्ण रूप में विद्यमान रहता है। वह कभी कम नहीं होता (अविनाशी)। हालाँकि यह दुनिया उनकी शक्तियों और ज्ञान से बनी है, फिर भी उनकी ताकतें और क्षमताएँ पूर्ण हैं। होता यह है कि एक ओर से उसकी शक्ति से संसार का निर्माण होता है, और दूसरी ओर से द्रव्यमान और ऊर्जाएँ प्रलय के बाद ईश्वर की शक्ति में विलीन हो जाती हैं। इसलिए वह हमेशा पूर्ण रहता है, और यह सत्य है, जबकि मनुष्य अपने शरीर के अंदर (भोजन आदि के माध्यम से) जो पैदा करते हैं उससे अधिक क्षमताओं का विस्तार करते रहते हैं। अतः मनुष्य तो एक दिन नष्ट हो जाता है (मर जाता है), परन्तु ईश्वर सदैव सभी युगों में पूर्ण रहता है। सत्यता सदैव बिना शर्त होती है। यह हर किसी को मानसिक शांति देता है।

आत्मा (ईश्वर का अंश) मानव शरीर (मनुष्य) का स्वामी है। यह आत्मा ईश्वर के समान ही शक्तिशाली एवं ज्ञानवान है परन्तु कम मात्रा एवं गुणों में है। ब्रह्माकुमारीज़ सिस्टर शिवानी आत्मा की सात शक्तियों के बारे में बताती हैं: पवित्रता, शांति, शक्ति, प्रेम, ज्ञान, सत्य और आनंद। ईश्वर में ये शक्तियाँ अनंत रहती हैं जबकि मनुष्य इन शक्तियों का विस्तार करता रहता है और अंततः एक दिन नष्ट हो जाता है। यह क्रोध, लालच, वासना आदि जैसे सभी शत्रुतापूर्ण कार्यों पर खर्च किया जाता है, जो अनुत्पादक हैं।

इसे हमारे व्यावहारिक जीवन में कैसे समझा जा सकता है? हमारे शरीर के अंदर ऊर्जा का व्यय और उत्पादन बराबर होना चाहिए; तभी हम एक लंबा, सुखी और संतुलित जीवन जी सकते हैं। (यह आदर्श सत्य अवस्था होगी)।

लेकिन हर दिन क्या होता है कि हम हमेशा अपने शरीर, अंगों, मन और वाणी के माध्यम से विभिन्न कार्य करते हैं। यदि हम समझदारी और ज्ञानपूर्वक कार्य करेंगे तो इस प्रक्रिया में हमारी ऊर्जा अच्छी तरह खर्च होगी। यह तभी होगा जब हम सच्चे होंगे। सत्य हमारे जीवन का एक अनिवार्य तत्व है। जब आप ईमानदार होंगे, तो आप शांति में रहेंगे, और यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हमें इसे पूरे मन से अपने जीवन में अपनाना होगा। "सत्य" शब्द का प्रयोग कभी-कभी "सत्य बोलो" या "सत्य का पालन करो" जैसी बातें कहने के लिए किया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि हमें वही बोलना चाहिए जो आपने देखा है, सुना है या समझा है और उसका समग्रता से पालन करना चाहिए।

व्यक्ति के लिए "योग साधना (अभ्यास)" में सबसे पहली आवश्यकता समाज में सौहार्दपूर्ण ढंग से रहना है, और इसे नियमों और विनियमों (यम) का पालन करके प्राप्त किया जाता है, जो "अष्टांग योग" (8 चरणों) में पहला कदम है योग का) जैसा कि महर्षि पतंजलि द्वारा प्रचारित किया गया। यम में अहिंसा (अहिंसा), सत्य (सत्य), अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (अनावश्यक चीजों का संग्रह न करना), और ब्रह्मचर्य (ब्राह्मण की तरह खुशी से रहना) शामिल हैं।

अधिकतर लोग पाखंडी हैं. वे ऊंचे मानकों का दावा करते हैं लेकिन अपने जीवन में गलत काम करते हैं। लोग कहते हैं कि वे शिकार के ख़िलाफ़ हैं, लेकिन वे फर कोट पहनते हैं। लोग अपने व्यवहार में उच्च नैतिक मानकों और विचारों का दिखावा करते हैं, लेकिन वे अलग तरह से कार्य करते हैं। लोग उपदेश देते हैं कि वासना समाज और निजी जीवन को हानि पहुँचाती है; वे अपनी ऊर्जा वासनापूर्ण गतिविधियों में बर्बाद करेंगे। यह पाखंड के अलावा कुछ नहीं है। ये लोग साधु के वेश में दूसरों को नुकसान पहुंचाते हैं। सत्यता वह स्थिति है जो सभी के लिए, सभी स्थानों पर, हर समय और लोगों के सभी समूहों के लिए समान होती है। आपके निजी और सार्वजनिक जीवन में कोई दोहरा मापदंड नहीं होना चाहिए। सच्चे व्यक्ति का मन शुद्ध हो जाता है और वह कभी भी अपने शरीर और इंद्रियों का दुरुपयोग नकारात्मक कार्यों और विचारों में नहीं करता है। वह वासना पर विजय पाता है और मानवता के प्रति सच्चा प्रेम विकसित करता है।

जब तुम सच्चे हो, तो तुम शांति में हो; जब आप शांत होते हैं तो आप किसी भी विषय का ज्ञान जल्दी ही प्राप्त कर लेते हैं। एक बार जब आपके पास क्षमता आ जाती है, तो आप मिथ्या ज्ञान/ज्ञान न होने की पीड़ा से बच जाते हैं। जब आप जानते हैं कि क्रोध आपके शरीर के लिए हानिकारक है और आपकी ऊर्जा अनावश्यक रूप से बर्बाद करता है, तो आप हमेशा इससे बचेंगे।

इंसान को हमेशा भगवान की तरह रहना चाहिए। यदि आप सच्चे बन जाते हैं, तो आप भगवान के समान बन जाते हैं। यह हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। एक सच्चा व्यक्ति खुद को खुश कर सकता है और दूसरों को भी खुश कर सकता है।

भाग्यवादी और पुरुषार्थी में श्रेष्ठ कौन?

पंकजा सिंह, परिवार सदस्य प्रो. जंग बहादुर सिंह

परमात्मा की इस सृष्टि में समस्त प्राणियों में मनुष्य ही सर्वोत्तम प्राणी है, जो अपने विवेक, बुद्धिमत्ता तथा चिंतन-शक्ति के कारण उचित-अनुचित, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म जैसे विषयों पर गंभीरतापूर्वक विचार करके सही निर्णय लेने की क्षमता रखता है। मनुष्य को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है- कर्मवीर और कर्मभीरु।

मनुष्य को अपने जीवन में अनेक प्रकार के संघर्ष करने पड़ते हैं, जिसमें अनेक कष्टों को सहना पड़ता है। कर्मवीर अथवा पुरुषार्थी मनुष्य अपने पुरुषार्थ के बल पर सफलता प्राप्त कर लेता है। पुरुषार्थ का संबंध मनुष्य के 'मन' से है, जो उसके सभी प्रकार के कर्मों तथा व्यवहारों को नियंत्रण करने वाली एक शक्ति है। इसके विपरीत कर्मभीरु मनुष्य भाग्य पर निर्भर रहता है।

भाग्य क्या है, प्रत्येक मनुष्य को इसे जानने की जिज्ञासा रहती है। कुछ मनुष्यों के मतानुसार 'अदृश्य' की लिपि ही भाग्य है, जिसे पहले से नहीं जाना जा सकता। भाग्यवादी मनुष्य आलसी तथा निकम्मा हो जाता है। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है और जो मनुष्य आलसी होता है, वह प्रत्येक काम करने से पहले ही सुस्ती व अनुत्साह दिखाने लगता है। अधिकतर जो मनुष्य आलसी होते हैं, वे केवल अपने भाग्य को ही कोसते रहते हैं। वे सोचते हैं कि जो भाग्य में लिखा है, वही होगा। भाग्य तो आलसियों का सबसे बड़ा सहारा होता है। वे हर कार्य भाग्य पर छोड़ देते हैं और परिश्रम से दूर भागते हैं। असफल होने पर वे जीवन भर भाग्य को कोसते रहते हैं। आलसी और भाग्यवादी मनुष्य ही कहा करते हैं-

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।

दास मलूका कह गए, सबके दाता राम ।।

इसके विपरीत जो मनुष्य पुरुषार्थ का दामन थामे रहते हैं, सफलता उनका वरण करती है। जो मनुष्य भाग्य के भरोसे न बैठकर पुरुषार्थ करते हैं, वे ही समय पर शासन करते हैं। आज मनुष्य पुरुषार्थ के बल पर आकाश में विचरण करने लगा है, समुद्र की गहराइयों तक पहुंच गया है। पृथ्वी के गर्भ से उसने रत्न निकाले हैं, पर्वतों के उच्चत शिखरों को उसने नाप लिया है। अर्थात् मनुष्य ने प्रायः सभी क्षेत्रों में अपने पुरुषार्थ का डंका बजाते हुए विजयश्री प्राप्त की है। मनुष्य ने पुरुषार्थ द्वारा अलभ्य को भी सुलभ बना दिया है। सत्य कहा गया है-

उद्यमेन हि सिध्यति कार्याणि न मनोरथै:।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा: ।।

अर्थात परिश्रम से ही सफलता मिलती है, न कि मन में सोचने मात्र से, जैसे सोते हुए सिंह के मुख में शिकार स्वयं नहीं जाता उसे भी परिश्रम करना पड़ता है।

भाग्यवादी मनुष्य मानते हैं कि उन्हें जो कुछ प्राप्त होता है, उनके भाग्य के अनुसार ही मिलता है। वे तो कहते हैं- 'कर्म गति टारे नाहीं टरें। उस अज्ञात शक्ति (भाग्य) के आगे बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को भी नतमस्तक होना पड़ता है। भगवान राम जिनके राजतिलक की तिथि गुरु वशिष्ठ जैसे ज्ञानी ने सोच-समझकर निकाली थी, उन्हें भी अपने भाग्य के अनुसार 14 वर्षों का वनवास काटना पड़ा। सत्यवादी हरिश्चंद्र भी अपने भाग्य के अनुसार एक डोम के हाथों बिके और श्मशान में नीच काम करना पड़ा। इसी तरह पांडव भी अपने भाग्य के अनुसार महलों का त्याग करके जंगल-जंगल खाक छानते रहे। इसलिए कुछ मनुष्यों का विश्वास है कि भाग्य के लिखे को कोई नहीं मिटा सकता। लेकिन पुरुषार्थ के पक्षधर मानते हैं कि मनुष्य अपने पुरुषार्थ और दृढ़ संकल्प से भाग्य को बदल सकता है।

भारतीय संस्कृति की मान्यता है कि पूर्व जन्म में किया हुआ कर्म ही भाग्य कहलाता है। अतः कर्म का मार्ग ही सर्वोत्तम है, वहीं पुरुषार्थ का मार्ग है और इसके बिना भाग्य भी किसी को कुछ नहीं दे सकता।

कला

कृतिका चौहान, पीजीपीएम 2022-24

जब निर्जीव वचनों ने भावनाओं का साथ छोड़ा,

जब विचारों के सैलाब ने मन को झंझोड़ा,

कला वो डोर बनी जिसने सभी को साधा।

महादेव से लेकर नटराज की मुद्रा तक, माँ सरस्वती की वीणा से लेकर तांडव तक, सभी वो अलंकार हैं जो इस प्रकृति के अविभाजित अंग हैं। कला वो है जो इस संसार में सर्वव्यापी होके भी मुक्त है जो स्थायी भी है और अस्थायी भी, जो प्रेम की लो में है तो आक्रोश की ज्वाला में भी। ऐसी अनंत काल से विद्यमान "कला" को परिभाषित करना उतना ही कठिन है, जितना नदी के प्रवाह को बदलना।

कला केवल नृत्य, संगीत गायकी या चित्रकारी तक ही सीमित नहीं। कला प्रकृति की भाँति सभी को अपना लेती है। कला वो माध्यम है जिससे मनुष्य अपने विचार, भावनाएँ, शेष, प्रेम संदेश व आपत्ति एक अहिंसात्मक रूप में प्रस्तुत कर सकता है। कला के द्वारा दिए जाने वाले संदेश कई गुना अधिक लोगों तक पहुँचते हैं व साथ ही उनके मस्तिष्क पर एक प्रभाव छोड़ते हैं। चिरकाल से हमारे देश में कला प्रस्तुती एक रिवाज रहा है जहाँ कलाकार ना ही अत्यंत परिश्रम से प्रस्तुति करते हैं बल्कि समाज को जागरुक, सतर्क व अपने दायित्व के प्रति सजग बनाते हैं। साथ ही बच्चों में जान का प्रवाह किया करते थे। कलाकार का ओहदा हमारे देश में बहुत ऊँचा व सम्मानीय माना गया है। एक कलाकार केवल कला सिखता या प्रस्तुत नहीं करता, उसे अपना जीवन अर्पण कर देता है, उसे अपनी आत्मा का अभिन्न भाग बना लेता है, उसी में अपनी भुगी व ग़म समेट लेता है।

कृष्ण की बाँसुरी में है कला, शेर के शिकार में है चिड़िया का घोंसला बनाना है कला, बादलों की आकृतियों में है कला, मीरा की भक्ति में है कला, कलाकार की हर श्वांस में है कला।

वॉशिंग मशीन – आंतरिक शांति के लिए गुरु

डॉ एलिज़ाबेथ वर्षा पॉल, पुत्री प्रो. सुरेश पॉल एंटनी

आपको आश्चर्य हो सकता है कि वाशिंग मशीन ने हमारे जीवन को कैसे बदल दिया।

चलिए मैं अपनी कहानी शुरू करती हूँ।

मेरी माँ को दो चीजों का शौक है- घर और साफ-सफाई। अगर मैं उसकी सबसे प्रिय रसोई में कुछ भी खो दूँ तो वह चिल्लाएगी। मेरी माँ ने हमें या घर को कभी नहीं छोड़ा। उन्हें 15 दिनों से अधिक की यात्रा करनी पड़ी क्योंकि उस समय उनके भाई की तबीयत ठीक नहीं थी।

खैर, तो मैं "सदन की रानी" बन गयी। मैं ख़ुश थी क्योंकि घर पर मेरा पूरा नियंत्रण था। मेरी नौकरानी हमारे लिए खाना बनाती थी, लेकिन काम चलाना अभी भी मेरी ज़िम्मेदारी थी।

शनिवार की शाम को मेरे पिता बहुत चिंतित थे। मैंने उससे पूछा, क्या तुम्हें कोई चिंता हो रही है? उन्होंने मुझसे धीरे से, कांपते हुए पूछा, "वर्षा, मैं कपड़े कैसे धोता हूँ?" मुझे आश्चर्य हुआ कि एक मार्केटिंग गुरु के रूप में वह इतने वर्षों तक ब्रांडिंग और सिमुलेशन सिखाते हुए क्या कर रहे थे।

मैंने उन्हें "घर के 7 अजूबे- वाशिंग मशीन" सिखाने के लिए आमंत्रित किया। यह एक अद्भुत, मृदुभाषी मशीन है जिसमें तापमान से लेकर कुल्ला करने तक के लिए 16 बटन हैं। सामने जानवर को देखकर वह चकित चकित हो गये। अत्यंत सावधानी और धैर्य के साथ, मैंने उसे डब्लयूएम के सभी बटनों का उपयोग करना सिखाया। सबसे पहले, वह डब्लयूएम के बड़े मुँह से भ्रमित हुए। एक शिक्षिका होने के नाते मैंने उन्हें समझाया कि यह वह दरवाजा है जहां कपड़े धोये जाते हैं। फिर मैं धीरे-धीरे सीखने के शुरुआती तरीके से उन्नत पाठ्यक्रमों की ओर आगे बढी। यानि कि उसे सभी 16 कार्य सिखाए जा रहे हैं। ओह, फिर मुझे उन्हें सिखाना पड़ा कि लिक्विड वॉश का उपयोग करके सभी दागों को कैसे हटाया जाए।

मेरे डेमो लेक्चर के बाद, मैंने उनसे स्वयं इसे ऑपरेट करने के लिए कहा। कार्य करने का समय। चूँकि वह जल्दी सीखते थे, इसलिए उसने मेरे निर्देशों के तहत सभी कार्य किए। कपड़े घूमते देखकर वह बहुत खुश हुआ। वह तुरंत मेरी माँ के पास गया और उन्हें बताया, "जिप्सी, मैंने डब्लयूएम का उपयोग करना सीख लिया"।

मेरी माँ ने राहत की सांस ली। और क्या आप अब भी जानते हैं कि वह इसके कार्यों को पूरी तरह से समझने के लिए हर दिन हमारे डब्लयूएम मैनुअल को पढ़ता है?

उस पल, मुझे एहसास हुआ कि शांति, सद्भाव और प्रेम को बढ़ावा देने की सबसे शक्तिशाली मशीन हमारे परिवार का उज्ज्वल भविष्य है। डब्ल्यूएम के लिए धन्यवाद, जिसने मुझे अत्यधिक अपेक्षाओं और तनावों से बचाया, मैं सच्ची आंतरिक शांति प्राप्त करने में सक्षम हुआ। तुम्हारी खुशी के लिए।

अपने दिन को सुंदरता से सजाएं: सकारात्मक जीवन के रहस्य

ध्रुविका नौटियाल, पीजीपीएम 2022-24

मनुष्य के जीवन में सुंदरता और प्रसन्नता की खोज हमेशा से ही चली आ रही है। हम सभी यह चाहते हैं कि हमारा जीवन सकारात्मक और सुंदर हो, लेकिन कई बार हम खुद को नकारात्मक विचारों के गहरे समुद्र में खो बैठते हैं। हालांकि, जीवन को सकारात्मकता से सजाना कठिन नहीं है, बल्कि यह हमारे अंदर छिपी हुई संभावनाओं को जागृत करके संभव होता है।

इस लेख के माध्यम से हम आपके साथ अपने दिन को सकारात्मक और सुंदरता से सजाने के कुछ संदेशों को साझा करने जा रहे हैं। सकारात्मक विचार हमारे मन के संचार को नकारात्मक से सकारात्मक में परिवर्तित करने की शक्ति होती है। जब हम खुद के विचारों को सकारात्मक बनाते हैं, तो हमारे जीवन का वातावरण भी सकारात्मक हो जाता है। इसलिए, रोजाना खुशियों, सफलता और प्रेम के सकारात्मक विचारों को अपनाएं।

धन्यवाद का भाव: हमें मदद और सहायता के लिए आभार प्रकट करना चाहिए। धन्यवाद कहना और धन्यवाद देने की आदत बनाना हमारे जीवन को आनंदमय बनाती है।

स्वास्थ्य आदतें: सबसे बड़ी संपत्ति है हमारा स्वास्थ्य। रोजाना योग और ध्यान अभ्यास करना, स्वस्थ आहार खाना और नियमित व्यायाम करना जीवन को सकारात्मक और उत्साहित बनाता है।

अध्ययन और समृद्धि: ज्ञान और शिक्षा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। नई चीजों को सीखना, नए क्षेत्रों में आगे बढ़ना हमें आनंद और समृद्धि का अनुभव कराता है।

सृजनशीलता का संबोधन: अपने कल्पना को जीवंत करें और सृजनशीलता का सामर्थ्य प्रकट करें। कला, संगीत, लेखन, या किसी अन्य रूप में, जब हम अपनी सृजनशीलता को जीवंत करते हैं, तो हमारे जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार होता है।

प्रियजनों के साथ समय बिताना: हमारे जीवन में हमारे प्रियजनों का स्थान विशेष होता है। उनके साथ समय बिताना, उनसे बातचीत करना, और उन्हें प्यार और सम्मान देना हमें आनंदमय और सजीव बनाता है।

प्रकृति के संग संवाद: प्रकृति हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा है और इससे संवाद करना हमें शांति और शक्ति देता है। प्रकृति में समय बिताने से हमारे अंदर की आत्मा सकारात्मकता से भर जाती है।

इन संदेशों को अपने दिनचर्या में शामिल करके, हम अपने जीवन को सुंदरता से सजा सकते हैं। सकारात्मक जीवन जीने के फायदे अनगिनत हैं और यह हमें सच्ची खुशियों का अनुभव कराता है।

आशा करते हैं कि यह लेख आपको प्रेरित करता है और आप अपने जीवन को सकारात्मकता और सुंदरता से भरने का संकेत करता है। सकारात्मकता और प्रसन्नता के साथ जीवन को जीने का मजा ही कुछ और होता है।

कुरुक्षेत्र से कॉर्पोरेट दुनिया तक: महाभारत के अद्भुत प्रबंधन ग्रंथ

राखी जोशी, पीजीपीएम 2023-25

भारतीय साहित्य में रचित महाभारत एक राष्ट्रीय धरोहर है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं की मनोहर गाथा है। इस महाकाव्य के शास्त्रीय अनुपमता में व्यापार और प्रबंधन के अनगिनत उपदेश छिपे हैं, जो वर्तमान समय में भी अपनाने लायक हैं। यह लेख आपको महाभारत से प्राप्त उपदेशों के माध्यम से व्यवसायिक जगत में उच्च स्तरीय प्रबंधन के महत्वपूर्ण सीख देगा।

1. **सही नेतृत्व - "ये धर्म मर्यादित है, धर्म को बिना धर्मी क्यों कहो?"**
   व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए सही नेतृत्व विशेष आवश्यकता है। पांडव भाइयों ने विजय के लिए वराहावतार श्रीकृष्ण का सहारा लिया, जो सही मार्ग की दिशा दिखा रहे थे। उन्हें समाज के लिए एक श्रेष्ठ उदाहरण बनाने के लिए उन्हें युद्ध के पहले अर्जुन को भी प्रेरित किया था। व्यापार में भी, सही नेतृत्व के बिना सफलता का अभाव हो सकता है।

2. **रणनीति और निर्णय - "विनाशकाले विपरीत बुद्धि।"**
   अच्छी रणनीति बिना सही निर्णय के निष्फल हो सकती है। कौरवों ने युद्ध के लिए केवल भारी सेना की धारणा की, जबकि पांडवों ने एक विचारपूर्ण योजना बनाई। अर्जुन ने दिव्यास्त्रों के ज्ञान को प्राप्त किया और उन्हें विवेकपूर्वक उपयोग किया। व्यापार में भी, सही निर्णय और रणनीति का अनुसरण करना व्यावसायिक सफलता का महत्वपूर्ण तत्व है।

3. **समर्थ्य का महत्व - "आत्मा विवेकी विद्वान्।"**
   ज्ञान के अभाव में समर्थ्य हानि का निश्चित फल होता है। अभिमन्यु ने अपने अधूरे ज्ञान के कीमत चक्रव्यूह में अपनी जान देकर चुकाई, जबकि अर्जुन ने अपने समर्थ्य पर विश्वास करके युद्ध में महत्वपूर्ण योगदान दिया। व्यापार में भी, हमें अपने समर्थ्य को समझने और इसका उचित उपयोग करने की आवश्यकता है।

4. **भरोसेमंद संबंध - "यावत्तावद् वित्तपाते सर्वे द्रव्यास्य नियोजय।"**
   संगठन की विजय में सहायता बनाने के लिए भरोसेमंद संबंध बहुत महत्वपूर्ण है। पांडवों ने अपने सदस्यों के साथ भरोसेमंद संबंध बनाए रखने के साथ-साथ विविध राज्यों के साथ भी समर्थक संबंध रखे, जो उन्हें युद्ध में बड़ी सफलता प्रदान करते थे। व्यापार में भी, अच्छे संबंध और नेटवर्किंग से हम अधिक लाभान्वित हो सकते हैं।

5. **समर्थक टीम का लक्ष्य - "एकता जीवन का आधार।"**
टीम में समर्थक और समर्थ लक्ष्य रखना अवश्यक है। दुर्योधन और कौरवों में अलग-अलग लक्ष्य होने से उन्हें विभाजित होना पड़ा और इसके परिणामस्वरूप उन्हें सफलता नहीं मिली। इसके विपरीत, पांडवों ने समर्थक टीम के रूप में संयुक्त लक्ष्य का चयन किया - कौरवों को हराकर राजगद्दी प्राप्त करना।

6. **उत्साह से भरा रहना - "तपसा शक्तिर्बलाद् भवेद् द्विजत्वम्।"**
यदि हम उत्साहवंत रहते हैं और प्रतिबद्ध हैं, तो किसी भी कार्य में हमारी सफलता निश्चित होती है। अर्जुन गुरुकुल में उत्साह से शिक्षा प्राप्त करते थे, और उसी उत्साह से वे दिव्यास्त्रों के ज्ञान को प्राप्त किया। व्यापार में भी, निरंतर उत्साह रखना और स्वयं को विकसित करने के लिए सक्रिय रहना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

7. **समाजिक समरसता - "समदुःखसुखः क्षमी।"**
समरसता सफलता की एक महत्वपूर्ण कुंजी है, जो समृद्धि को बढ़ाती है। पांडव हमेशा अपने परिवार की महिलाओं की सलाह सुनते थे और उन्हें समरसता में शामिल करते थे। इसके विपरीत, कौरवों ने महिलाओं की सहभागिता को नकार दिया था और उन्हें सही और समरसता से नहीं जोड़ा।

महाभारत में छिपे ये अनमोल उपदेश व्यापारिक दुनिया में उच्च स्तरीय प्रबंधन के लिए मार्गदर्शक हैं। सही नेतृत्व, रणनीति, समर्थ्य, समर्थक टीम, उत्साह, भरोसेमंद संबंध और समाजिक समरसता जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण तत्व हैं। महाभारत के अद्भुत उपदेशों का सम्मान करते हुए, हम व्यापारिक जगत में सफलता के लिए इन्हें अपना सकते हैं।

भारतीय संस्कृति और परंपरा

दिव्यांशु झा, पीजीपीएम 2022-24

भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाजों, और परंपराओं के प्रसिद्धता और महत्व के बारे में जानकारी

प्रस्तुत लेख में हम भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रसिद्धता और महत्व को समझने की कोशिश करेंगे। भारतीय संस्कृति भारत की विविधता, समृद्धि, और अद्भुतता का प्रतीक है, और इसे समझने के लिए हमें भारतीय रीति-रिवाजों और परंपराओं के महत्वपूर्ण अंशों की गहराई में जाने की आवश्यकता है।
संस्कृति और रीति-रिवाजों की परिभाषा और प्रसिद्धता भारतीय संस्कृति भारत की अमूल्य संपत्ति है, जिसमें समृद्धि, संघर्ष, और सद्भाव का प्रतीक छिपा है। भारतीय संस्कृति भिन्न-भिन्न भाषाओं, धर्मों, जातियों, और आदिवासी समुदायों के समान अधिकार और समान अवसरों के अनुभव को दर्शाती है। भारतीय संस्कृति की गहराई उसकी विविधता में छिपी है, जिसमें उत्सव, रंगों, संगीत, नृत्य, और शिक्षा के सौंदर्य में समाहित होते हैं।

भारतीय संस्कृति में रीति-रिवाज हमारे पूर्वजों के अनमोल विचारों और धार्मिक आदर्शों को प्रकट करते हैं। ये रीति-रिवाज आज भी हमारे देश की परंपराओं और संस्कृति के एक अहम हिस्से के रूप में उत्साह से जीवित हैं। धार्मिक त्योहार, उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, और पारंपरिक कला-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में ये रीति-रिवाज महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय परंपराओं की प्रसिद्धता और महत्व

भारतीय परंपराएं हमारे संस्कृति के महत्वपूर्ण हिस्से हैं, जो हमें हमारे पूर्वजों की सोच, संस्कृति, और धार्मिक आदर्शों के साथ जोड़ती हैं। इन परंपराओं को अपनाने से हमारे दिल में सद्भावना, सामंजस्य, और समृद्धि की भावना उत्पन्न होती है। धार्मिक त्योहारों में गणेश चतुर्थी, दिवाली, होली, राखी, और जन्माष्टमी भारतीय परंपराओं के महत्वपूर्ण त्योहार हैं।

भारतीय संस्कृति में विविधता के साथ ही विकास भी एक अहम् अंश है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज के आधुनिक भारत तक, हमारी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में विकास दिखाई देता है। आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और कला में भारतीय युवा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर आत्मविश्वास से उभरते हुए दिखाई देते हैं।

संस्कृति और परंपरा के महत्व का संक्षेपण

भारतीय संस्कृति और परंपराएं हमारे देश के लिए गर्व का विषय हैं। ये हमें हमारे पूर्वजों के ज्ञान, संवेदनशीलता, और सद्भाव के साथ जोड़ते हैं। इन्हें जीवंत रखकर हम भारतीय संस्कृति को समृद्ध रूप से आगे बढ़ा सकते हैं। धरोहरों को संभालना, परंपराओं को जीवित रखना, और भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने के लिए हम सभी को एक मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

इस लेख के माध्यम से हमने भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाजों, और परंपराओं के महत्व के बारे में जानकारी प्रासंगिक तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया है। हमारी संस्कृति की धरोहर और रीति-रिवाज हमारे लिए विशेष अभिवादन हैं, जिनका सम्मान करना आवश्यक है। आइए हम सभी मिलकर अपनी संस्कृति को गर्व से जीवित रखें, और एक समृद्ध और समरस्त भारत का निर्माण करें।

भारत का भविष्य - आगामी नेता

मिथलेश त्रिवेदी, पीजीपीएम 2022-24

वैदिक काल में भारत का महत्व:

भारत का इतिहास वेदों के काल से विश्व के अन्यान्य राष्ट्रों के समक्ष एक विशेष महत्व रखता है। वेदों में नासदीया सूक्त के माध्यम से भारत की सृजनशीलता, अद्भुत विचारधारा और अनंत ज्ञान का प्रतिपादन किया गया है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार वेदों में दर्शाया गया है, जिसमें विज्ञान, धर्म, समाज और शिक्षा के लिए विशेष निर्देश दिए गए हैं। वेदों के समय से ही भारत विश्व का आदर्श रहा है और अपने आदर्शवादी दृष्टिकोण से विश्व में प्रसिद्ध हुआ है।

मुगल सम्राटों के शासनकाल में भारत समृद्ध और समृद्धि के दिनों का उदाहरण है। वे भारतीय संस्कृति को समझते थे और उसे समर्थन करते थे। वे संघर्षरहित और सामर्थ्यपूर्ण शासन प्रणाली के साथ भारत को प्रबल बनाने में लगे रहे। उनके शासनकाल में भारत विविधता और समृद्धि के क्षेत्र में अपनी गरिमा बरत रहा था। हालांकि, ब्रिटिश आधिपत्य के दौरान भारत का इतिहास अन्यत्र उलझ गया। इस दौरान भारतीय अधिकारियों का पारंपरिक सम्मान का संक्षिप्तरूप रट्टी राज्य था, जिसे वे इस देश को संभालने के लिए कारगर बना लिया था। ब्रिटिश शासन ने भारतीय समाज में धार्मिक और सामाजिक बदलाव को अंजाम दिया और जनता के समर्थन में कार्य करते हुए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का संवर्धन किया।

भारतीय संस्कृति ने समय-समय पर आक्रमणों के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों के बावजूद अपने समृद्ध धरोहरों को संरक्षित किया है। इतिहास में अनेक बार विदेशी शासकों ने भारतीय संस्कृति को धार्मिक और सांस्कृतिक उत्साह की मार से घेर दिया था, लेकिन भारतीय लोगों ने सदैव अपनी संस्कृति की रक्षा की। इनके बदलते समय के साथ, भारतीय संस्कृति ने अपनी एकता और समृद्धि की गरिमा बरकरार रखी है। आज भी भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में जीवन भर के संभव्यता है जैसे कि कला, संगीत, नृत्य, शास्त्रीय संगीत आदि, जो इसकी विशेषता को दर्शाता है।

भारत ने आधुनिक युग में तकनीकी उन्नति और अर्थव्यवस्था में विश्व में उच्च स्थान प्राप्त किया है। भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बड़ी प्रगति की है और विश्व के लिए एक अग्रणी देश के रूप में पहचान बनाई है। आजकल भारत विश्व के अग्रणी सॉफ्टवेयर सेवा प्रदाता है और इलेक्ट्रॉनिक्स, संचार, सॉफ्टवेयर, फार्मास्युटिकल, ऑटोमोबाइल आदि के क्षेत्र में विश्वस्तरीय उत्पादन का मुख्य निर्यातक देशों में से एक है। भारत की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था और ग्रामीण क्षेत्र में विकास के योजनाएं विश्व में सराही जा रही हैं। भारत ने विश्व के सबसे बड़े अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपनी पहचान बना ली है और अपने ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए प्रशंसा के पात्र है।

भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र है जो अपने विकास और प्रगति के क्षेत्र में उच्चतम स्थान पर है, लेकिन इसके साथ-साथ भारतीय संस्कृति में सम्मान, दया और सहानुभूति के लिए भी प्रसिद्ध है। भारत के इतिहास में

कई महान व्यक्तियों ने दया और सहानुभूति की भावना को अपनाया है और समाज को एकता और समरसता की मिसाल प्रदान की है। भारत एक ऐसा देश है जहां विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के मेल मिलाप को समझा जाता है और सभी को समान रूप से सम्मान दिया जाता है। भारतीय नारी की सांस्कृतिक धारोहर में उनकी शक्ति, साहस और समर्पण की कहानियों से भरी हुई है, जो समाज में दया, धर्म और नैतिकता के अद्भुत संदेश प्रदान करती हैं।

भारत का भविष्य एक समर्थ, समृद्ध और विकासशील राष्ट्र के रूप में सामाजिक, आर्थिक और वैज्ञानिक क्षेत्र में अपार उत्कृष्टता को संजोने की तरफ बढ़ रहा है। भारतीय युवा पीढ़ी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के क्षेत्र में अपने नए मापदंड स्थापित कर रही है। आधुनिक तकनीकी उन्नति, विज्ञान और भूगोल के क्षेत्र में भारत ने अपनी पहचान बनाई है और विश्व में अग्रणी देशों में से एक बन चुका है। भारत की अर्थव्यवस्था दिन ब दिन मजबूत हो रही है और उसके ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए प्रशंसा के पात्र है। भारत के भविष्य में नई ऊँचाइयों को छुने की संभावना है और विश्व में अपनी पहचान बनाने के लिए विशेष योजनाएं की जा रही हैं।

समाप्ति:

भारत का भविष्य एक उज्ज्वल, तकनीकी और सांस्कृतिक उत्कृष्टता से भरा हुआ है। इस विशाल देश ने अपने इतिहास में विभिन्न परिस्थितियों का सामना किया है और हर बार विजयी होकर नये आयाम स्थापित किए हैं। भारतीय संस्कृति, परंपरा और विविधता ने विश्व को अपनी विशेषता का अनुभव कराया है और इसका योगदान भारत के भविष्य में भी महत्वपूर्ण होगा। भारत का भविष्य आगामी नेता बनाने के लिए तैयार है, जो विश्व में एक शक्तिशाली और समरसता से भरा हुआ समाज बनाएगा। यह सोच, अनुशासन, साहस और समर्पण के साथ संभव होगा। भारत का भविष्य एक राष्ट्रीय संकल्पना और समर्थ नेतृत्व से बनेगा, जो विश्व में अपनी विशेषता को प्रकट करेगा। भारतीय समाज और संस्कृति ने हमेशा से समर्थन का साथ दिया है, और आने वाले समय में भी उन्हें यही करने की आवश्यकता है। इस अद्भुत यात्रा में, भारत एक सशक्त और दयालु नेतृत्व के साथ आगे बढ़ेगा और विश्व के सभी राष्ट्रों के बीच एकता और सहयोग को स्थापित करेगा। भारत का भविष्य उज्ज्वल है, और उसकी ऊर्जा और अनुशासन से विश्व में नए दिन की प्रतीक्षा है।

आज़ाद भारत की 75 साल की यात्रा

दर्पद पेडणेकर, पुत्र, आदेश पेडणेकर, ईपीएलसीएम03

1945 तक बहुत लोग ब्रिटिश शासन से आज़ादी के लिए शहीद हुए। इसलिए आज 2023 में हम आज़ादी का अमृत मोहोत्सव मना रहे हैं।

भारत की संस्कृति और इतिहास 10 हजार वर्षों से अधिक पुराना है। भारत इतना विशाल है की उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक हम बहुत सारे त्योहार मनाते हैं। इसी वजह से हमें बहुत सारा स्वादिष्ट भोजन मिला है। हमारे देश में लगभग तीस से ज्यादा भाषा बोली जाती है।

आज विश्व में भारत की आबादी 1.4 अरब है। पूरे विश्व में भारत एक बड़ा लोकतंत्र है। हमारे देश में भारत EVM का उपयोग हर पांच साल में चुनाव के लिए किया जाता है। कोई दूसरी देश चुनाव के लिए EVM का इस्तेमाल नहीं करता है।

आज़ादी के बाद भी पड़ोसी देशों ने भारत पर आक्रमण किया है। साल 1948 में पाकिस्तान ने कश्मीर छीनने के लिए युद्ध किया। इसके बाद पाकिस्तान ने 1965, 1971 और 1999 में युद्ध किया। चीन ने 1962 और 1967 में भारत के साथ युद्ध किया। 1998 में पोखरण में एक गुप्त परमाणु परीक्षण करके भारत एक परमाणु राष्ट्र बन गया।

आज भारत का सूर्य किरण से बिजली निर्माण 40GW (GiGa Watts) है और अगले पांच वर्षों में 100GW हो जाएगा। ढेर सारी सूरज की ऊर्जा से विद्युत उत्पादन में देश “One Sun One World, One Grid और “World Solar Bank” का प्रवेश पेश कर गया।

Indian Space Research Organisation (ISRO) मिशन मंगलयान से मंगल ग्रह और मिशन चंद्रयान से चांद पर यान भेजे हैं। भारत ने अपनी पहले ही कोशिश में मंगल ग्रह की परिक्रमा में उपग्रह भेजा। भारत अपने चंद्रयान के साथ चंद्रमा पर अपना झंडा लहराया। भारत का अंतरिक्ष अभियान बाकी के राष्ट्रों की तुलना में सस्ता है।

भारत, ताजे फल, दूध, सूर्यफूल और दाल इत्यादि का बहुत बड़ा उत्पादक है। पूरी दुनिया में चावल, घी, गन्ना, आलू, चाय पत्ती और रुई इत्यादि के उत्पादन में हमारा दूसरा स्थान है।

भारत दवाई के उत्पादन में विश्व में सबसे सस्ती कीमत पर दवा बेचता है। COVID-19 के टीकाकरण के लिए Covidsheild और Covaxin का अनुसन्धान भारत में हुआ | आज की तारीख में लगभग 50 crore टीकाकरण किया गया है। भारत अन्य राष्ट्रों को दवाई बेचता है, ताकि सारी दुनिया में टीकाकरण का काम हो। इस प्रकार भारत ने “वसुधैव कुटुंबकम” के माध्यम से नेतृत्व किया कि संपूर्ण ब्रह्मांड मेरा परिवार है।

महकते फूल

कडारी माधवी, पुत्री संतोष कादरी

भगवान तेरे बाग में
खिलते हैं रंग-बिरंगे
फूल महकते हुए चमकते हुए
लहलहाते हैं अति सुंदर

भौरों की ये अमृत पिलाते
सुगंध से दिलों को बहकाते
दो दिन का जीवन है
पर कल की चिंता नहीं इन्हें

'आकाश की ओर इनकी है नज़र
हृदय है मस्त हरि के स्मरण में
बस हँसते गाते चल बसे
इस चमन को सुरभित कर गये
फूलों का है जीवन अति सुंदर
हे मानव! फूलों से कुछ सीखो

अपने जीवन को भी अति सुंदर बना ले
हँसते-गाते जीवन बिता ले
हरि का नाम-स्मरण कर ले

आत्म-दर्शन पा ले सच्चिदानंद के दर्शन कर ले।

नानी का घर

कडारी मयांशी, पुत्री संतोष कादरी

मुझे अपनी नानी का घर बहुत पसंद है
नानी के घर में खेलना कूदना अच्छा लगता है

माँ से जुड़े ये रिश्ते बड़े प्यारे होते हैं
मामा और मासी का बंधन तो जग से न्यारा होता है

मामा जब आते है मेरी मन पसंद की चीजें लाते हैं।
और मासी माँ जैसा मेरा खयाल रखती है।

मैं और छोटा भाई मामा और मासी के संग खूब मजे करते है।
नानी के घर में त्योहार जैसा होता है।

अमीर और गरीब

के एम हर्षिता, पुत्री, के मुथुकुमारन

एक अमीर परिवार था और एक गरीब परिवार था। अमीर परिवार से एक लड़का था और गरीब परिवार से एक लड़का था। अमीर परिवार के लड़के का नाम राहुल था और गरीब परिवार के लड़के का नाम रमन था। राहुल धन के बारे में हमेशा सोचते थे और रमन पढ़ने के बारे में सोचते थे। राहुल हमेशा सोचते थे की धन होने के कारण वह सब कुछ कर सकते है। बल्कि रमन को पढ़ने में दिलचस्पी थी। दोनों एक ही स्कूल में पढ़े। रमन अच्छे तरह से पढ़ते थे और राहुल को पढ़ने में ध्यान नहीं था। रमन और राहुल बड़े हो गये। एक परीक्षा में रमन को अच्छे अंक मिले और राहुल को बहुत बुरे अंक मिले। इसलिए रमन को अच्छे कॉलेज में प्रवेश मिले और राहुल को कही नहीं मिले। दो वर्ष के बाद रमन को अच्छे दफ्तर में काम मिला और राहुल को किसी दफ्तर में काम नहीं मिला।

नैतिक: पढ़ाई करने से गरीब लोग भी ऊपर आ सकते हैं। लोग जितने भी अमीर हों, बिना पढ़ाई ,वह कभी भी ऊपर नहीं आ सकते हैं।

रामू और उसका दोस्त रोहन

के एम हरीश, पुत्र, के मुथुकुमारन

एक दिन रामू और उसका दोस्त रोहन एक साथ स्कूल गये। वे दोनों भोजन करने के लिए भोजनालय गये। उसके बाद अंग्रेजी पुस्तक लिए और पढ़े। स्कूल खत्म होने के बाद दोनों घर लौट आए।

शाम को रोहन की माँ ने रोहन को दूध दिया। रामू और रोहन शाम छह बजे खेलने गये। सात बजे दोनों अपने घर वापस आ गये। अगले दिन रविवार था। दोनों टहलते समय अचानक सड़क के पास जो नदी है उसमें रामू गिरने लगा। उसी समय रोहन ने रामू के हाथ पकड़कर उसको गिरने से बचाया।

नैतिक: दोस्ती ही सबसे बड़ा धन है।

“ईकिगाई: जापानी सागर का खजाना”

बबीता जी, पीजीपीएम 2022-24

“ईकिगाई” एक आवश्यक पठन से अधिक है, यह एक जीवनशैली की दिशा प्रदान करने वाली एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक पुस्तक है। लेखक केन्सेकी माओ ने इस पुस्तक में जापानी जीवनशैली के मूल तत्वों को सुंदरता से प्रस्तुत किया है। पुस्तक आपको आपके जीवन के उद्देश्य की पहचान, उसे प्राप्त करने के तरीके, संतोष की प्राप्ति, और सकारात्मक जीवन जीने के लिए एक मार्गदर्शन प्रदान करती है।

यह पुस्तक जीवन में सही संतोष की खोज में है और सफलता की परिभाषा को नए दृष्टिकोण से परिभाषित करने का प्रयास करती है। लेखक का कहना है कि जब हमारे जीवन के काम, पैसे, पूर्णता और पैशन का सही संयोजन होता है, तो हम अपने ईकिगाई क्षेत्र में पहुँचते हैं - वह स्थान जहां से हमारी खुशियाँ और संतोष निकलते हैं।

इस पुस्तक में गहराई से जापानी संस्कृति के सिद्धांतों का परिचय देते हुए, “ईकिगाई” आपको आपके जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक चरणों की पहचान में मदद करेगी। यह पुस्तक विचारशीलता, आत्म-साक्षरता, और स्वावलंबन की महत्वपूर्णता को प्रोत्साहित करती है, जो आपके जीवन को एक नई दिशा में मोड़ सकते हैं।

कुल मिलाकर, “ईकिगाई” एक प्रेरणादायक और जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में उपयुक्त है। यह पुस्तक हर व्यक्ति को उनके जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर सोचने के लिए प्रोत्साहित करेगी जो सफलता, संतोष और स्वावलंबन की खोज में लगे हैं।

राग दरबारी : एक समीक्षा

शिवम कुमार वर्मा, पीजीपीएम 2022-24

नाम सुनते ही ऐसा प्रतीत होता है कि संभवतः संगीत की कोई किताब है। हालांकि इस संदर्भ में प्रमुखता "राग" की न हो के "दरबारी" की है।

श्रीलाल शुक्ल जी का लिखा हुआ यह साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित उपन्यास सन् 1967 में प्रकाशित हुआ और 1986 में एक दूरदर्शन धारावाहिक के रूप में भी इसे जनमानस तक ले जाया गया।

इस किताब पर समीक्षा लिखने के 2 मुख्य कारण हैं: पहला - कि 60 के दशक में लिखे जाने के बावजूद इसकी कहानी आज भी भारतीय ग्रामीण इलाकों की एक बेजोड़ छवि प्रस्तुत करती है और दूसरी- यह कि, यदि यह समीक्षा पढ़ने के बाद आपका मन करे, तो हमारी {लाईब्रेरी} (एल० आर० सी०) में ये उपलब्ध है।

कहानी है एक हमारे-आपके जैसे युवा छात्र की, जो कुछ दिनों के लिए अपने कुछ रिश्तेदारों के घर, शिवपालगंज आया है। शिवपालगंज, एक काल्पनिक गांव है, जो कि संभवतः इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के आस-पास कहीं स्थित है। कहने को तो यह एक राजनीतिक व्यंग्य (पॉलिटिकल सटायर) है, परन्तु उत्तर - भारतीय ग्रामीण जीवन का भी सजीव चित्रण श्रीलाल शुक्ल जी ने बेहद ही खुले मन से किया है।

ग्रामीण जीवन और वहाँ की अपनी अनूठी राजनीति का गहन अवलोकन करते हुए जो विवरण 'राग दरबारी में मिलता है, उसका श्रेय श्रीलाल जी के उसी क्षेत्र के होने और उत्तर प्रदेश में ही उनकी भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई० ए० एस०) की नौकरी को भी देना चाहिए।

कहानी के मुख्य किरदार रंगनाथ के अलावा बाकी किरदारों जैसे- रुप्पन, वैद्य जी, सनिचर, स्कूल में पढ़ाने वाले मास्टर साहेब, पोस्टमैन, अखाड़े में कुश्ती करने वाले पहलवान इत्यादि, को भी पाठक तक आने का लेखक ने प्रचुर मात्रा में समय दिया है। हर घटना को व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत करना, और उसे किसी और भारतीय बात जैसे- रामायण, स्वतंत्रता संग्राम इत्यादि से जोड़ना, हर बार कहानी में एक नया रंग जोड़ देता है। जगह-जगह पर खड़ी बोली, देहाती नामों जैसे- सनिचर, लंगड़ा, और आम ग्रामीण जीवन में रोजमर्रा की बातें इसे उनलोगों के लिए बेहद दिलचस्प बनाती है, जिनका कुछ सरोकार रहा है गांवों से।

उपन्यास में टिप्पणियों से जो व्यंग्य भरा गया है, उसका एक उदाहरण देखिए। यहां बात हो रही है कुछ नौजवानों के लगाए गए एक विचित्र ठहाके के बारे में:-

"सब वर्गों की हँसी और ठहाके अलग-अलग होते हैं। कॉफी हाउस में बैठे हुए साहित्यकारों का ठहाका कई जगहों से निकलता है, वह किसी के पेट की गहराई से निकलता है, किसी के गले, किसी के मुँह से और उनमें से एकाध ऐसे भी रह जाते हैं, जो सिर्फ सोचते हैं कि ठहाका लगाया क्यों गया है। डिनर के बाद कॉफी पीते हुए छके हुए अफसरों का ठहाका दूसरी ही किस्म का होता है। वह ज़्यादातर पेट की बड़ी ही अन्दरूनी गहराई से निकलता है। उस ठहाके के घनत्व का उनकी साधारण हँसी के साथ वही अनुपात बैठता है जो उनकी आमदनी का उनकी तनख्वाह से होता है। राजनीतिज्ञों का ठहाका सिर्फ मुँह के खोखल से निकलता है और उसके दो ही आयाम होते हैं, उसमें प्रायः गहराई नहीं होती। व्यापारियों का ठहाका होता ही नहीं है

और अगर होता भी है तो ऐसे सूक्ष्म और सांकेतिक रूप में, कि पता लग जाता है, ये इनकम टैक्स के डर से अपने ठहाके का स्टॉक बाहर नहीं निकालना चाहते। इन नौजवानों ने जो ठहाका लगाया था, वह सबसे अलग था। यह शोहदों का ठहाका था, जो आदमी के गले से निकलता है, पर जान पड़ता है, मुर्गों, गीदड़ों और घोड़ो के गले से निकला है।"

राग दरबारी की प्रासंगिकता पर प्रस्तावना में श्रीलाल जी ने कहा है, "यह सही है कि गाँवों की राजनीति का जो स्वरूप यहाँ चित्रित हुआ है, वह आज के राष्ट्रव्यापी और मुख्यतः मध्यम और उच्च वर्गों के भ्रष्टाचार और तिकड़म को देखते हुए बहुत अदना जान पड़ता है और लगता है कि लेखक अपनी शक्ति कुछ गँवारों के ऊपर ज़ाया कर रहा है। पर जैसे-जैसे उच्चस्तरीय वर्ग में गबन, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और वंशवाद अपनी जड़ें मज़बूत करता जाता है, वैसे-वैसे आज से चालीस वर्ष पहले का यह उपन्यास और ज़्यादा प्रासंगिक होता जा रहा है।"

भ्रष्टाचार और पतन की व्याख्या हास्यास्पद तरीके से करने के लिए एक विचित्र प्रकार की दक्षता लगती है। राग दरबारी इसका एक अच्छा उदाहरण है। यह उपन्यास ग्रामीण जीवन में पाए जाने वाले भ्रष्टाचार, भोलेपन और मूर्खता के विभिन्न पहलुओं पर आधारित है।

लेखक ने हास्यास्पद ढंग से प्रांतीय प्रतिष्ठानों में नौकरशाही और राजनीति के बीच में झूलती हुई आत्माओं पर प्रकाश डाला है, जो कि अनजान लोगों और एक अनजान सरकारी व्यवस्था के बीच लटके हुए हैं।

गाँधी जी का कथन था, कि भारत का पतन होना निर्भर करता है, ग्रामीण समाज के पतन पर। और मेरी समझ से शायद यह बात आज भी उतनी ही कारगर सिद्ध होती है, जितनी 70 के दशक में थी। गहरे व्यंग्यात्मक लहजे में लिखा गया यह उपन्यास देहाती समाज की बखिया उधेड़ता हुआ आपका मनोरंजन तो करता है, लेकिन इसी ग्रामीण जीवन की कुछ और बातों को लेकर हमें एक गहरे अवसाद में छोड़ जाता है। यह आपको सोचने पर विवश कर देगा, उस भारत के बारे में जिसकी चर्चा आज भी उस दर्जे पर नहीं होती जितनी होनी चाहिए।

हिन्दी दिवस समारोह, 14 सितंबर 2022

हिंदी ओरिएंटेशन कार्यक्रम (2021-22)

Notes

Notes

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली
Indian Institute of Management Tiruchirappalli
Pudukkottai Main Road, Chinna Sooriyur Village
Tiruchirappalli - 620 024, Tamil Nadu.

cygnusadvertising.in